आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- badhtekadam1@gmail.com

अंक – 85 सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार अप्रैल, 2020 मूल्य 5 रूपए

कोरोना वायरस और लॉकडाउन की दोहरी मार

सड़क और कामकाजी बच्चे हाशिए पर

बालकनामा ब्यूरो

कोरोना वायरस से बचाव में छेड़ी गई जंग जीतने के लिए लॉकडाउन का असर सभी पर हुआ है। इसके चलते सड़कों पर कूड़ा बीनने वाले और कामकाजी बच्चे भी बुरी तरह से प्रभावित हो गए हैं। उनकी जिंदगी हाशिए पर चली गई है। वे गरीब और कामकाजी बच्चे दाहरी मार झेलने को मजबूर हो गए हैं। उन्हें कोरोना बीमारी से बचाव भी करना है। साफ–सफाई पर भी ध्यान देना है। खाना भी जुटाना है और परिवार के खर्च के लिए काम भी करना है। वह सब रूक गया है।

नगला पत्थर घोड़ा से 12 वर्षीय सीमा ने अपनी समस्या और मुसीबतों के बारे में बताया– मैं कोठी पर काम करने जाती थी, लेकिन लॉकडाउन के चलते काम पर नहीं जा पा रही हूं। इस कारण घर में बहुत परेशानी हो रही है। खाने के लिए राशन नहीं है। इधर–उधर से उधार पैसे लेकर अपने घर का गुजारा कर रही हूं।

उसने आगे बताया– मम्मी–पापा का काम भी बंद हो चुका है। ऊपर से मकान मालिक हमसे घर का किराया मांग रहा है। यहां पर खाने के लाले पड़े हुए हैं और मकान मालिक को अपने किराए की पड़ी है। वह बात–बात पर मकान खाली करने की धमकी भी देता रहता है।

रेलवे स्टेशन पर रहने वाले 13 वर्षीय मुन्ना की हालत भी काफी खस्ता हो चुकी है। उसने बताया– मैं कबाड़ चुनने का काम करता हूं। अभी लॉकडाउन होने के कारण मैं काम करने नहीं जा पा रहा हूं। हमारी तरह दूसरे बच्चे काफी परेशान

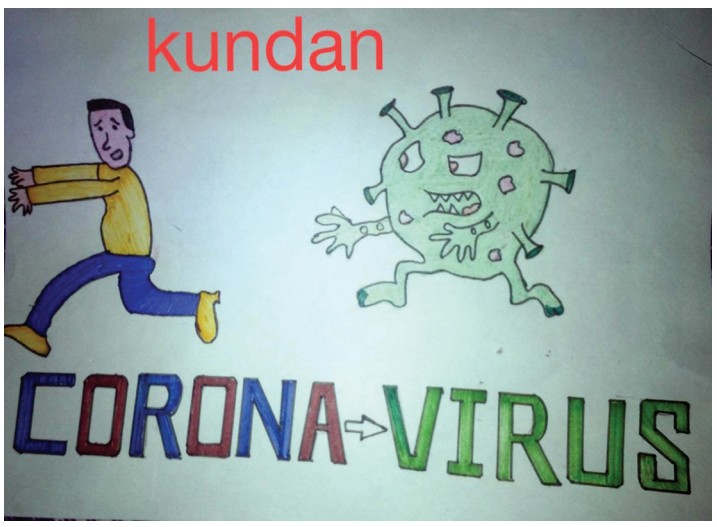

हैं। हम अपने खाने की व्यवस्था भी नहीं कर पा रहे हैं। पहले हम बच्चे कबाड़ बीनकर कुछ पैसे इकट्ठा कर लेते थे, जिससे अपने खाने–पीने का इंतजाम हो जाता था। अब न तो हमें भर पेट खाना मिल पर रहा है और न ही हम कहीं रह पा रहे हैं। ऐसे में हम सड़कों पर रहने वाले कामकाजी बच्चों को बहुत दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा हैं।

मारवाड़ी इंदिरा नगर की रहने वाली 14 वर्षीय प्रियंका की मुश्किल भी कुछ कम त्रासदीभरी नहीं है। उसने बताया– यहां पर बच्चे भीख मांगने का काम करते हैं। लॉकडाउन में बच्चे भीख मांगने नहीं जा पा रहे हैं। कुछ बच्चे हंटर बनाने का काम करते थे। लॉकडाउन की वजह से हमारा काम बंद हो गया है। यहां रहने वाले सभी बच्चे बहुत परेशान हैं। उनके लिए खाने की व्यवस्था नहीं हो पा रही है।

उसने छोटे-छोटे बच्चों की मुश्किलों के बारे भी बताया– इधर कई छोटे–छोटे बच्चे हैं, जो दूध पीकर ही रहते हैं। उन्हें दूध नहीं मिलने से वे भूखे पेट सोने को मजबूर हैं। उनके मां–बाप के पास पैसे नहीं होने से वे बच्चों को दूध नहीं दे पा रहे हैं। उन्हें पानी मिला दूध पिलाकर किसी तरह से रखना पड़ रहा है।

लॉकडाउन में बांटे जाने वाले खाने को लेकर भी प्रियंका को काफी शिकायतें हैं। उसने कहा– इस स्थिति में कोई खाना देने आता भी है, तो वह कच्चा होता है। वह खाना भी किसी को मिलता है और किसी को नहीं मिलता।

बिलोचपुरा में रहने वाली लड़की 14 वर्षीय करिश्मा ने बताया– मैं अपनी मम्मी के साथ पायल पर स्टोन रखने का काम करती हूं। इस लॉकडाउन के कारण पूरा काम चौपट हो गया। इस समय हम बहुत परेशान हैं। घर में एक भी पैसा नहीं है। राशन खत्म हो गया है। इसके अलावा हमारी बाकी की दूसरी निजी जरूरतें भी हैं। वह भी पूरी नहीं हो रही है। घर में भूख से परेशान बच्चे रोज चिल्लाते हैं। हमारे मां-बाप भी काम पर नहीं जा पा रहे हैं। ऐसे समय में हम क्या करें, कहाँ जाएं? कभी–कभी मन बहुत बेचैन हो जाता है।

सराय कालेखां में रहने वाले बच्चों से बालकनामा के पत्रकार ने बात की तो उन्होंने बताया कि हम बच्चे बहुत परेशानियों का समाना कर रहें हैं। पहले तीन वक्त का खाना खाते थे। अब सिर्फ एक वक़्त का खाना नसीब हो रहा है। वह भी कच्चा–पक्का।

अपने कामधंधे की चिंता करते हुए

शेष पृष्ठ 2 पर

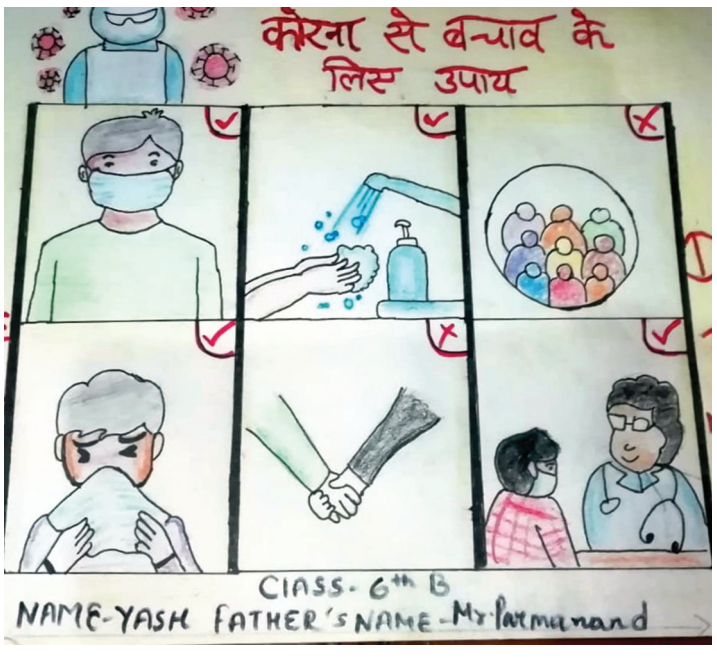

संपादकीय

बालकनामा का यह अंक कोरोना वायरस की महामारी के चलते लॉकडाउन के कारण सड़क और कामकाजी बच्चों की जिन्दगी में आयी मुसीबतों को लेकर तैयार किया गया है। बच्चों और बातूनी रिपोर्टरों ने बड़ी मेहनत करके खबरों को मोबाइल के माध्यम से एकत्रित करके लॉकडाउन और कोविड 19 जैसी महामारी के प्रभाव को अपने शब्दों में बयान किया है। इसके अलावा लॉकडाउन के कारण घर में रह कर अपनी त्रासदी को पेंटिंग के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। यह अंक इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि अत्यंत सीमित साधनों के साथ बच्चों ने अपनी बात असरदायक ढंग से रखी है। आशा है , आप सभी महानुभावों और पाठकों को यह अंक पसंद आएगा। आप सब का सहयोग पहले की तरह मिलेगा ताकि कामकाजी बच्चे और भी उत्साह से अपनी स्वयं की पत्रकारिता कर सकें।

–सम्पादकीय टीम

स्कूल में लगती लंबी कतार, 3 घंटे बाद मिलता भोजन

बातूनी रिपोर्टर सिमरन

परिवारिक स्थिति

नौ वर्षीय सिमरन अपने परिवार सहित कलंदर कॉलोनी की झुग्गी में रहती है। उसके परिवार में छह सदस्य हैं। मम्मी–पापा, उसके दो भाई और बूढ़ी दादी है। सिमरन के पापा फैक्ट्री में बोतल के ढक्कन बनाने का काम करते हैं। उसकी मम्मी कोठी में साफ–सफाई का काम करती है। सिमरन घर पर अपने भाइयों की देखभाल करती है, लेकिन वह घर के काम में भी अपनी मम्मी की सहायता करती है। कभी–कभी अपनी मम्मी के साथ कोठियों में भी काम करने चली जाती है।

सिमरन का दाखिला चेतना संस्था के द्वारा करवाया गया था। तब से सिमरन रोज विद्यालय जाती है। उसके भाइयों का अभी दाखिला स्कूल में नहीं हुआ है। इसी मार्च में उनका दाखिला करवाना था, परंतु लॉकडाउन हो गया। अब दाखिला उसके खुलने के बाद होगा!

लॉकडाउन की स्थिति

जब से लॉकडाउन हुआ है, तबसे सिमरन का परिवार घर पर ही है। सिमरन के माता–पिता काम पर नहीं जा रहे हैं। राशन के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं। सिमरन के परिवार के पास राशन कार्ड नहीं है, जिस कारण उन्हें राशन नहीं मिल पा रहा है। राशन के लिए सिमरन का परिवार आधार कार्ड लेकर कई जगह पर गए, लेकिन उन्हें राशन नहीं दिया गया।

सिमरन की मम्मी सीमापूरी विधायक के पास भी राशन लेने के लिए कुछ औरतों के साथ गई थी। वहां सभी दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक बैठकर राशन के लिए इंतजार किया, पर खाली हाथ लौटा दिया गया। उसके बाद चेतना कार्यकर्ता ने उन्हें बच्चों के स्कूल से मिलने वाले पैसे के बारे में बताया।

उन्होंने बताया कि किसी का खाता अभी तक नहीं खुला है, क्योंकि घर में उसके अलावा किसी का आधार कार्ड नहीं बन पाया है।

सिमरन की मम्मी जिस दिन उसका खाता खुलवाने गई थी उसके अगले दिन ही लॉकडाउन हो गया। खाता नहीं खुल पाया। सिमरन के पापा ने अभी घर के राशन के लिए किसी से 3000 रुपये बिना ब्याज के उधार लिया है। उसकी मां ने अपनी मालकिन, जहां काम करती है,से मदद मांगी थी। परंतु उसने पैसे देने से मना कर दिया।

सिमरन की मम्मी कभी-कभी खाना लेने के लिए स्कूल जाती है। स्कूल का खाना का बिल्कुल भी अच्छा नहीं होता है। फिर भी खाना लेने जाती है। वहां पुलिस वाले मारने लगते हैं। जब भी पुलिस वाले नहीं होते तब वह चुपचाप से खाना लेकर आती है।

सिमरन की मम्मी के पास पैसा खत्म होने वाला है। वह चेतना कार्यकर्ता से भी कई बार मदद मांग चुकी है। सिमरन का परिवार अभी बहुत परेशानी में है। स्कूल से खाना भी नहीं ला पाती है। खाना मिलता भी है, तो बहुत लंबी लाइन लगानी पड़ती है। दो–तीन घंटे में नंबर आता है। जब तक बच्चे भी इंतजार करते–करते थक जाते हैं। गोद में छोटे बच्चे इंतजार करते हुए सो जाते हैं। इतना कुछ करने के बाद जाकर कुछ खाने का बंदोबस्त हो पाता है। वह भी खाने की केवल खानापूर्ति हो रही है।

सिमरन बहुत ही समझदार लड़की है वह अपने घर की हर परिस्थिति को समझती है और इन परिस्थितियों से मुकाबला कर रही है। वह जानती है यह परेशानी कुछ दिन में खत्म हो जाएगी। अभी सिमरन के परिवार के पास कुछ दिनों का ही राशन बचा है। उसके बाद उनकी परिस्थिति और खराब हो सकती है!

सड़कों पर कूड़ा बीनने वाले बच्चे हाशिए पर

पृष्ठ 1 का शेष

बच्चों ने बताया– जब से लॉकडाउन शुरू हुआ है हम सब अपने घरों में बैठे हुए हैं। जो हमारे पास पैसा था वह खर्च हो चुका है। इस वक्त हमलोग एक टाइम का खाना खाते हैं। हम कर्ज में डूब गए हैं। पूरे दिन भूखे रहते हैं। जहां हमलोग रहते हैं वहां हम जैसे कफी लोग आते हैं। कोई कुछ बांटने के लिए आता है, वहां काफी भीड़ लग जाती है। दूरी बनाने के नियम का कोई पालन नहीं करता है। पुलिस वाले ही उसे भगा देते हैं। बच्चों को भी भगा देते हैं। वे कहते हैं यहां पर बच्चों को सभी सुविधाएं मिल रही हैं। इस कारण हमारी आंखों के सामने से ही खाना बांटने वाले चले जाते हैं। इसी वजह से बच्चे बहुत परेशान रहते है।

कल्पना (परिवर्तित नाम) से बात हुई। उसने बताया कि उसके घर में उसके पापा का देहांत हो चुका है। उसके जो बाकी भाई और बहन हैं वे भी बीमार चल रहे हैं। मां भी अक्सर बीमार रहती है। पैसों का घोर अभाव है। इस कारण वह अपनी मां का इलाज नहीं करवा पा रहा पा रहा है। लॉकडाउन के समय में खाने के लाले पड़े हुए हैं।

उसने बताया कि परिवार में किसी के पास आधार कार्ड नहीं है। जिससे उन्हें कोई भी सरकारी सुविधा नहीं मिल पाती है। सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा पता चला है कि कूपन के द्वारा राशन मिलता है। राशन स्कूल में बांटा जाता है। कई जगहों पर आधार कार्ड दिखाने पर राशन दिया जा रहा है। कूपन भी आधार कार्ड के माध्यम से ही ऑनलाइन मिल रहा है। उनके पास कोई दस्तावेज नहीं होने की वजह से वह उस सुविधा से भी वंचित हैं।

कल्पना ने बताया कि सरकार द्वारा जनधन खाते में कुछ बच्चों के खाते में 500–500 रुपये आए हैं। यह बात उसे सुनने को मिली है। पर उसके पास कोई सरकारी कागज नहीं होने के चलते ये सुविधा नहीं मिल पाई है।

उसने कहा कि सरकार की तरफ से विधवा पेंशन भी दी जाती है, पर कोई दस्तावेज नहीं होने के कारण उसकी मां को यह सुविधा भी नहीं मिल रही है। उसने कहा– इस समय हमारे घर की हालात बेहद खराब है। खाने–पीने की घोर कमी है। पैसों का अभाव है। इलाज कराने तक के लिए पैसे भी नहीं है। कल्पना चाहती है कि उसकी घर की हालत और उसकी मम्मी की तबीयत जल्द से जल्द ठीक हो जाए।

सूर्या (परिवर्तित नाम) से बात हुई। उसने बताया कि जो लोग खाना देने आते हैं, और जब लाइन लगती है तब वह लाइन काफी लंबी हो जाती है। इस कारण बहुतों को खाना नहीं मिल पाता है। जिनको खाना नहीं मिल पाता है वे घर लौटते समय दुकानों से 2 किलो चावल और आटा उधार ले आते हैं, लेकिन अपने छोटे बच्चों के लिए दूध की व्यवस्था नहीं कर पाते हैं। अधिकतर मां-बाप के पास पैसा नहीं होता है। माता-पिता छोटे बच्चों का पानी पिलाकर पेट भर रहे हैं। कुछ लोग उधार पैसे लेकर अपना गुजारा कर रहे हैं। वे पैसे भी कम पड़ जाते हैं। दिन पर दिन ब्याज के साथ कर्ज बढ़ता ही जा रहा है।

क्या हैं बच्चों की परेशानियां?

बच्चों को घर में रहना पड़ रहा है। समय पर पर्याप्त खाना नहीं मिल रहा है। घर में बैठे-बैठे बच्चे बीमार पड़ रहे हैं। बच्चों के माता–पिता के पास पैसे खत्म हो गए हैं। दिन–प्रतिदिन कर्ज बढ़ रहा है। उसकी चिंता बच्चों को अभी से सताने लगी है कि वे कैसे इस कर्ज को उतारेंगे? छोटे-छोटे बच्चों को दूध की व्यवस्था नहीं हो पा रही है। परेशानी बढ़ती जा रही है। कोई खाना भी देने आता है, तो इतनी लंबी लाईन लग जाती है कि किसी को खाना मिलता है किसी को नहीं। आधे बच्चे तो बिना खाए ही सो जाते हैं। ऐसा करने से बच्चों की तबीयत बिगड़ रही है।

बच्चे घरों में कैद होकर चिड़चिड़े हो गए हैं। वे बोर हो रहे हैं। छोटे-छोटे बच्चों के पास किसी प्रकार के खेल–खिलोने नहीं हैं, जिससे वह अपना समय व्यतीत कर सकें। सड़क, रैन बसेरा में रहने वाले बच्चों कि दशा भी दयनीय है। किन्हीं के पिता की तबीयत ठीक नहीं, तो कोई बेसहारा है। वह आखिर किससे उधार लेकर अपना जीवन यापन करेगा और कैसे अपने आपको कोरोना वायरस जैसी भयंकर महामारी बीमारी से अपना बचाव करेगा, जबकि वे खुले आसमान के नीचे रहते हैं।

उनके पास मास्क, सैनीटाइजर, साबुन, धुले हुए कपड़े, साफ पानी नहीं है। कई परिवार एक साथ रैन बसेरा में रहते हैं। सड़क पर जीवन यापन कर रहे बच्चों में शामिल नशा करने वाले बच्चे भी शामिल हैं, जो नशा नहीं करने की वजह से बीमार पड़ रहे हैं। लॉकडाउन की स्थिति में उन्हें नशा नहीं मिल पा रहा है। इसकारण वे बेचैन और विक्षिप्त रहते हैं।

अधिकतर बच्चों के आधार कार्ड भी नहीं हैं, जिससे वह ऑनलाइन राशन कूपन का लाभ उठा सके। आधार कार्ड के बिना बच्चे सरकारी सुविधाओं से वंचित हैं।

क्या कर रहे हैं बच्चे?

बच्चे अपने घरों में बैठकर लूडो वगैरह खेल लेते हैं। कुछ बच्चे अपने घर में पढ़ाई कर अपना मन लगा रहे हैं। थोड़ी–बहुत कंकड़(छोटे–छोटे पत्थर आदि) से खेलते हैं। कुछ बच्चे ड्राइंग बनाकर अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। कोई कैरम बोर्ड खेल रहे हैं, तो कोई टीवी देख लेते हैं। जिन बच्चों के पास यह सभी सामान उपलब्ध नहीं हैं वह अपने अपने घर में अपने माता–पिता के साथ बाकी कामों में मदद कर रहे हैं।

क्या-क्या मिल रही है सुविधाएं?

इस समय बच्चों को कोई सुविधा नहीं मिल रही है। न तो बच्चों का जनधन खाता है, और न ही वह किसी सरकारी योजनाओं से जुड़े हैं। अधितर छोटे बच्चों के लिए दूध भी नहीं मिल पा रहा है। जिनके पास आधार कार्ड है उनको सरकार द्वारा राशन मिला है। उन्हें ऑनलाइन कूपन से राशन मिला।

इसके अलावा जब बच्चे स्कूल जाते थे तब बच्चों का स्कूल द्वारा जो खाता खोला गया था उनमें सरकार द्वारा कुछ पैसे प्राप्त हुए। उससे उनके घर मैं खाने का सामान खरीदने में थोड़ी मदद मिली, लेकिन वह बहुत थोड़े थे। कुछ समाजसेवी संस्थाओं के लोग राशन और पका हुआ खाना बांटते थे। इन सुविधाएं से परिवार और उनके बच्चों की तकलीफे कुछ कम हुईं। हालांकि ये राहत उन्हें ही मिल पाई, जिनके पास आधार कार्ड या राशन कार्ड जैसे दस्तावेज थे और वह किसी न किसी सरकारी योजना से जुड़े थे।

क्या है बच्चों के विचार?

मुसीबत झेलते हुए बच्चों का कहना है की उन्होंने लॉकडाउन का पालन किया है और ऐसा हर किसी को करना चाहिए। अपने आसपास जो भी बीमारी फैल रही है उसे दूर रहना चाहिए। बीमारी के बारे में एक–दूसरे को बताना चाहिए। अपने आसपास साफ-सफाई रखनी चाहिए।

हम जब किसी से बातचीत कर रहे हैं, तो खांसते समय हमेशा अपने मुंह पर कपड़ा बांधकर या अपनी कोहनी की तरफ रुख कर लेना चाहिए, जिससे बीमारी कम हो। दूसरों को प्रभावित नहीं कर पाएं। कोरोना वायरस से बचने के लिए यही एकमात्र उपाय है। हमसभी को सरकार द्वारा बताए गए सभी नियमों का पालन करना चाहिए और सावधानी बरतनी चाहिए

क्या चाहते हैं बच्चे?

बच्चे चाहते हैं कि कोरोना वायरस बीमारी का जल्द से जल्द सफाया हो जाए और लॉकडाउन खुल जाए। हम पहले की तरह काम पर जाने लगें। हमारा भारत देश की चहलपहल पहले जैसी हो जाए। बच्चों की सरकार से यह अपील भी है कि लॉकडाउन के चलते कर्ज में डूबे उनके परिवार कर्ज से मुक्ति दिलावाई जाए। ऐसा नहीं होने पर कर्ज का बोझ हम बच्चों पर आ जाएगा। बच्चे चाहते हैं कि उनके माता-पिता या बच्चों के खाते में कुछ पैसे आए, ताकि वे जल्दी से कर्जा उतार सकें। उसके बाद बाकी की जरूरतें पूरी हो सके।

इसके अलावा बच्चों कि मांग है कि लॉकडाउन मैं काम–धंधा सब चौपट हो चुका है। कई दिनों तक काम नहीं मिल पाया है। लगा हुआ काम भी हमें नहीं मिल जाए। सरकार को चाहिए कि वह इसमें हमारी मदद करे। हमें रोजगार देने हेतु कुछ उपाय करे।

हमारे माता–पिता, भाई–बहन के इलाज करने का भी बीड़ा उठाये। या फिर घरों में राशन पहुंचाने का फैसला ले, जिससे हमारे घरों की अर्थव्यवस्था कुछ हद तक ठीक हो सके। हम यही सरकार से अपील करना चाहते हैं।

कर्ज में डूबा परिवार दर–दर भटका, नहीं मिला राशन

बातूनी रिपोर्टर रोशनी

परिवारिक स्थितिः रोशनी अपने परिवार सहित धर्मपुरा की झुग्गी में रहती है। उसके परिवार में 8 सदस्य हैं। मम्मी–पापा, चार बहनें और दो भाई हैं। उसके पापा सब्जी का ठेला लगाने का काम करते हैं।

रोशनी सभी भाई–बहनों में सबसे बड़ी है। वह अपने पापा के साथ उनके काम में हाथ बंटाती है। जबकि उसकी मम्मी घरों में साफ–सफाई का काम करती है। रोशनी घर पर अपने भाई–बहनों की देखभाल करते हुए घर के कामकाज में अपनी मम्मी की मदद भी करती है।

रोशनी का दाखिला चेतना संस्था के द्वारा करवाया गया है। तब से वह रोजाना विद्यालय जाती है। उसके सभी भाई–बहनों का दाखिला भी चेतना संस्था के द्वारा करवाया जा चुका है। रोशनी घर में धागा काटने का काम करती है।

लॉकडाउन की स्थितिः जब से लॉकडाउन हुआ है तबसे रोशनी का परिवार घर पर ही है। उसकी मम्मी की तबीयत ठीक नहीं रहती है। वह काम पर भी नहीं जा पा रही है। उसके पिताजी सब्जी का ठेला भी नहीं लग पा रहे हैं, क्योंकि पुलिस वाले बहुत तंग कर रहे हैं। पास बनवाने के बाद भी सब्जी का ठेला नहीं लग रहा है।

वे राशन के लिए इधर-उधर भटकते रहते हैं। परिवार के पास राशन कार्ड नहीं है, जिस कारण उन्हें राशन नहीं मिल पा रहा है। रोशनी के परिवार में दो सदस्य के पास ही आधार कार्ड है। एक उसकी मम्मी और दूसरे उसके पापा का आधार कार्ड नंबर। चेतना कार्यकताओं ने उन्हें बताया कि आप अपने दोनों आधार कार्ड लेकर कूपन वाला राशन कार्ड बनवा लो।

वे कई जगह आधार कार्ड की कॉपी लेकर गए, पर उन्हें राशन नहीं मिला। वह कंप्यूटर की दुकान पर भी कूपन राशन कार्ड बनवाने के लिए कई बार गए, लेकिन वहां भी उन्हें खाली हाथ लौटा दिया गया। अभी तक उन्होंने बच्चों का बैंक में कोई भी खाता नहीं खुलवाया। कारण उनका आधार कार्ड नहीं था। इसकारण उन्हें कोई सहायता नहीं मिल पाई।

उन्होंने अपने पड़ोसियों से 4000 रुपये उधार लिए। घर का कुछ राशन लाया। यह पैसे उन्होंने बिना ब्याज के मिले थे। उन्होंने लॉकडाउन खुलने के बाद पैसे वापस करने का वादा किया है। रोशनी का परिवार किराए के मकान पर रहता है। मकान मालिक भी उनसे किराया मांग रहा था।

रोशनी और उसकी बहन व भाई तीनों हर रोज सुबह–शाम स्कूल से खाना ले आते हैं। उन्हें स्कूल से जो खाना मिलता है वह उनके परिवार के लिए बहुत कम पड़ता है। खाना जैसे–तैसे मिलने के कारण परिवार में सभी सदस्यों की हालत बहुत ही खराब हो रही है।

मम्मी की तबीयत खराब होने पर उनकी दवाई के पैसे भी नहीं है और घर पर जो धागा काटने का काम करते थे वह भी बंद हो गया है वहां से अभी उन्हें कोई पैसे नहीं मिले हैं जब भी सब्जी का ठेला लगाते हैं तभी पुलिस उन्हें डंडे मारती है इस डर से वह ठेला भी नहीं लगा रहे हैं चेतना कार्यकर्ता से भी कई बार मदद मांग चुकी है रोशनी का परिवार अभी बहुत परेशानी में है उनके पास पैसा भी नहीं है स्कूल से खाना लाकर ही खा रहे हैं उसी से उनका गुजारा चल रहा है जो बचा बचा–खुचा राशन है उससे ही घर का खर्चा चल रहा है।

लॉकडाउन की मार, 10,000 के कर्ज में डूबा परिवार

बातूनी रिपोर्टर इल्मा

10 वर्षीय इल्मा अपने माता–पिता, तीन बहनें और दो भाई के साथ शास्त्री पार्क की झुग्गियों मै रहती है। इल्मा स्कूल जाती है और एजुकेशन क्लब पर पढ़ने भी आ जाती है। माता–पिता इल्मा को बहुत प्यार करते हैं। पिता कबाड़ी का काम करते हैं। मम्मी धागे काटने का काम करने के अलावा घर का भी काम करती है। साथ ही दूसरे बच्चों की देखभाल करती है। इल्मा की बड़ी बहन भी धागे काटने का काम करती है। इल्मा स्वभाव से बहुत शांत है। उसका पढ़ाई में बहुत मन लगता है। खेल खेलना भी उसे पसंद है। वह सबकी बात सुनती है, और मानती भी है।

लाकडाउन के बाद की स्थितिः इल्मा इस समय अपने परिवार के साथ घर में रह रही है, और मां की थोड़ी–बहुत मदद करती रहती है। वह पढ़ाई के लिए अपने बड़े भाई और बहन की मदद लेती है। जब कभी इल्मा को पढ़ाई के पाठ में कुछ समझ मै नहीं आता है, तो वह अपने भाई–बहन की मदद से सीख और पढ़ लेती है। थोड़ी बहुत भाई के साथ ही खेल भी लेती है। मौका निकालकर कुछ समय अपने छोटे भाई को पढ़ा भी देती है। लेकिन हां, उसे अभी घर में अच्छा नहीं लग रहा है। क्योंकि इस समय उसे ज्यादातर घर के अंदर ही रहना पड़ रहा है। परिवार में भी लाकडाउन को लेकर बहुत परेशानी चल रही है। पापा का काम तो बिल्कुल ही बंद हो गया है। मां घर में ही रहती थी, जिसकी वजह से पैसे भी नहीं मिल रहें हैं। घर में जो काम चलता था वह भी बंद हो गया है। मैम ने कूपन के द्वारा राशन मिलने की बात बताई, परन्तु उसका कोई बहुत लाभ नहीं हुआ।

इल्मा के घर में राशन कार्ड है। राशन कार्ड से राशन तो मिल गया, लेकिन उसके बाद सिर्फ कच्चे राशन गेंहू और चावल का क्या करते? इसलिए पापा ने बाकी के रोजाना दूसरे खर्च के लिए एक जान–पहचान वाले से बगैर ब्याज के 10,000 रुपये उधार ले लिया। उसके बाद इल्मा के पिता के पास जो घर में बचे सामान और पैसे थे, उनसे काम चलाया।

लॉकडाउन बढ़ जाने से अब काफी परेशानी हो रही है। इल्मा के पापा बहुत चिंतित रहते हैं, क्योंकि उनका काम नहीं चल रहा है। लॉकडाउन में पापा कहां जाएंगे? कई दिनों तक तो कुछ लोग खाना आकर दे जाते थे, लेकिन अब वे लोग भी नहीं आ रहे हैं। इसके बाद मैम से स्कूल में खाना मिलने की बात पता चली, तो अब स्कूल से जाकर खाना लाते हैं। वहां भी रोज–रोज जो खाना मिला है, वह सिर्फ खिचड़ी होती है। वह बिल्कुल भी अच्छी नहीं होती है। ऐसा लगता है कि केवल उबला हुआ हो, लेकिन खाना तो पड़ेगा ही। यही सोचकर खा लेते हैं। अब हम सब क्या करें? कब तक ऐसी ही परेशानी का सामना करना पड़ेगा और कैसे हमारी परेशानी खत्म होगी?

अब तो पैसे भी नहीं हैं हमारे पास। सभी ने मदद करने के लिए मना कर दिया है। बहुत परेशानी हो रही है। सब कुछ कब सही होगा और कब इस परेशानी से आजादी मिलेगी? हम सभी चाहते हैं कि जल्दी ही ये सब परेशानी खत्म हो जाए और सबकुछ पहले जैसा हो जाए। इसलिए हम सभी लॉकडाउन का पालन कर रहे हैं, और घर में रहकर अपनी सुरक्षा कर रहे हैं!

राशन मिला, चिंता निजी जरूरतों की

बातूनी रिकॉर्डर जॉयनाल

पारिवारिक स्थितिः 11 वर्षीय जोयनाल अपने परिवार सहित गुरुग्राम (हरियाणा) में किराए की एक झुग्गी में रहता है। उसके परिवार में 4 सदस्य मम्मी–पापा, वह और उसका भाई हैं। पापा पास की सोसाइटी मे हाउसकीपिंग का काम करते हैं। उसकी मम्मी भी पास की ही सोसाइटी में हाउसमेड का काम करती है। जोयनाल भी अपनी मम्मी के साथ घर के काम में हाथ बँटाता है। इसके अलावा वह अपने भाई का ध्यान रखता है।

लॉकडाउन की स्थितिः जब से लॉकडाउन हुआ है तब से जोयनाल का परिवार घर पर ही रहते हैं। उसके माता-पिता काम पर नहीं जा रहे हैं। जोयनाल के परिवार के पास राशन कार्ड नहीं है। पापा के पास कुछ पैसे हैं, जिससे उनका घर का गुजारा बड़ी मुश्किलों से चलता है। जोयनाल ने बताया कि कुछ दिन पहले उन्हें झुग्गी के ठेकेदार से कुछ राशन की मदद मिली थी। जिससे उनका गुजारा चल रहा है।

उन्हें चेतना संस्था द्वारा भी राशन की मदद मिली है। जिससे उनका गुजारा चल रहा है। उसने बताया कि उसकी मम्मी और पापा दोनों ने रोजा रखा है। लॉकडाउन में उसके परिवार के पास कुछ ही पैसे बचे हैं। वह कभी-कभी किसी दिन खिचड़ी बनाकर अपने घर का गुजारा कर रहे हैं। जोयनाल के पापा से फोन के द्वारा बातचीत हुई, तो उन्होंने कहा कि उन्हें सरकार से कुछ पैसों की मदद की जरूरत है। वे चाहते हैं कि उनके अकाउंट में भी कुछ पैसे आए, लेकिन कोई मदद उन्हें नहीं मिला है।

जोयनाल ने बताया कि यहां गर्मी पड़ने लगी है। बिजली भी नहीं रहती है। सभी लोग पेड़ के नीचे बैठते हैं। कोई भी सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं करता है। यहां पर ठेकेदार भी किराए देने के लिए कह रहे हैं। उन्होंने कहा है कि इस महीने किराया देना ही पड़ेगा। चाहे कुछ ही पैसे दे दो। जोयनाल ने बताया कि समय से पानी नहीं आता है। पीने के पानी की बड़ी समस्या है। लॉकडाउन के कारण कुछ लोग राशन बांटने के लिए आते हैं, लेकिन भीड़ होने की वजह से राशन दिए बिना ही चले जाते हैं। इस वजह किसी को भी राशन नहीं मिल पाता। नंबर आने तक राशन खत्म हो जाता है। जोयनाल बहुत समझदार लड़का है। उसका परिवार अभी परेशान है, क्योंकि उनके पास बहुत कम पैसे बचे हैं। आगे उनका गुजारा कैसे होगा इसकी चिंता उन्हें सताती है।

घर में पैसे की कमी, स्थिति बेहद गंभीर

बातूनी रिपोर्टर साबिर

पारिवारिक स्थितिः साबिर अपने परिवार सहित पेट्रोल पम्प(शास्त्री पार्क) किराए की एक झुग्गी में रहता है। उसके परिवार में पांच सदस्य हैं। मम्मी–पापा, वह, उसका बड़ा भाई और एक बड़ी बहन। पापा की आंखें खराब है, जिस कारण वे घर पर ही रहते हैं। साबिर की मम्मी कारखाने मै जींस के धागे को काटने का काम करती है। बड़ा भाई कोई काम नहीं करता है। साबिर और उसकी बड़ी बहन घर पर कारखाने के जींस पर नग चिपकाने का काम करते हैं। बड़ी बहन घर पर ही रहती है। इसके अलावा वह पापा की देखभाल करता है। साथ में पढ़ाई भी करता है। साबिर का दाखिला भी चेतना संस्था के द्वारा ही करवाया गया था।

लॉकडाउन की स्थितिः जब से लॉकडाउन हुआ है, तब से साबिर का परिवार घर पर ही हैं। साबिर की मम्मी काम पर नहीं जा रही है। वह खाने के लिए और राशन के लिए इधर-उधर भटकती है। साबिर के परिवार के पास राशन कार्ड नहीं है। उसके पापा तो वैसे ही कोई काम नहीं करते हैं। ऐसे में मम्मी के पैसों से ही घर का खर्च चलता है।

लॉकडाउन में उसकी मम्मी के पास बिल्कुल भी पैसा नहीं बचा है। वह रोज यही सोचती रहती है कि काश हमारा काम शुरू हो जाए, जिससे वह अपने परिवार का पेट भर सके। कभी-कभी रात में साबिर के घर पर खाना तक नहीं बन पाता है। उन्हें भूखे पेट सोना पड़ता है। कभी– कभी कोई खाना दे देता है, तो उसी से काम चल जाता है और अब साबिर के घर में खाना स्कूल से ही आता है। दो टाइम का खाना मिलता है। सुबह और शाम को।

कुछ दिन पहले साबिर की मम्मी ने 500 रुपये बिना ब्याज के किसी जान–पहचान वाले से उधार लिए थे। अब वे भी खत्म हो गए। कुछ दिन पहले कुछ लोग आए थे ओर साबिर की मम्मी का नाम लिख कर गए। उन्होंने कहा कि राशन देंगे, लेकिन वे फिर लौट कर नहीं आए। उसकी मम्मी खाने के लिए स्कूल जाती है, लेकिन वहां भी खाना एक सदस्य का ही मिल पाता है, जबकि घर मै पांच सदस्य हैं। इस लॉक डाउन मैं सबका पेट भरना भी मुश्किल हो रहा है। मकान मालिक भी उन्हें रोज परेशान कर रहा है, क्योंकि वह उनसे किराया मांग रहा है। इस समय वह उसे किराया नहीं दे सकती है।

साबिर के पास बैंक अकाउंट हैं, लेकिन उसमें अभी तक स्कूल का कोई पैसा नहीं आया है। उन्हें बहुत परेशानी आ रही है। अभी इस समय वह थोड़ा कम, और रूखा–सूखा खकर गुजारा कर रहे हैं। साबिर बहुत ही समझदार और शांत बच्चा है। इस समय वह अपना और अपने मम्मी–पापा के साथ घर पर रह रहा है। किसी चीज के लिए परेशान नहीं करता है। उसकी मम्मी अभी परेशान है, क्योंकि उनके पास बहुत कम पैसे बचे हैं। आगे उनका गुजारा कैसे होगा, इसकी चिंता उन्हें खाए जा रही है।

लॉकडाउन में कैसे होगा गुजारा

बातूनी रिपोर्टर फरीन

पारिवारिक स्थितिः आठ वर्षीय फरीन अपने परिवार सहित नई सीमापुरी में किराए की एक झुग्गी में रहती है। उसके परिवार में 5 सदस्य हैं। मम्मी–पापा, वह और उसके तीन भाई–बहन हैं। पापा और मम्मी कबाड़ बीनने का काम करते हैं। फरीन भी अपनी मम्मी के साथ कबाड़ बीनने का काम करने के लिए जाती है। इसके अलावा वह अपने भाई–बहनों का भी ध्यान रखती है। फरीन का दाखिला चेतना संस्था द्वारा कराया गया था।

लॉकडाउन की स्थितिः जब से लॉकडाउन हुआ है तब से फरीन का परिवार घर पर ही है। उसके माता-पिता काम पर नहीं जा रहे हैं, लेकिन वे लोग राशन के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं। फरीन के परिवार के पास राशन कार्ड नहीं है। उसके पापा दारू पीते हैं। मम्मी के पैसों से ही घर का खर्चा चलता है। लॉकडाउन में उसकी मम्मी के पास बिल्कुल भी पैसा नहीं है। वह रोज तीन टाइम खिचड़ी बनाती है। उसी से किसी तरह घर का गुजारा चल रहा है। कभी-कभी फरीन की नानी भी खाना भिजवा देती है।

फरीन की मम्मी के पास मोबाइल है, लेकिन लॉकडाउन के समय उसमें रिचार्ज खत्म हो गया, जिस कारण उन्हें बहुत सारी परेशानी हुई। उसके बाद उन्होंने बंगाल में अपने भाई के पास फोन किया, जिन्होंने उनका रिचार्ज करवाया। फरीन का घर गली के एक कोने पर है, जिसकी वजह से जब भी राशन के लिए कोई आता है, तो उसके घर तक नंबर आने तक राशन खत्म हो जाता है और उन्हें राशन नहीं मिल पाता। फरीन की मम्मी बच्चों को स्कूल खाना लेने के लिए नहीं भेजती है। स्कूल घर से बहुत दूर पड़ता है, जिस कारण डर की वजह से वह बच्चों को खाना लेने नहीं भेजती है।

फरीन की मम्मी ठेकेदार से 2000 रुपया बिना ब्याज पर उधार लेकर आई थी। उसी से वह अपने घर का खर्चा चला रही है। मकान मालिक भी उन्हें रोज परेशान कर रहा है। वह उनसे किराया मांग रहा है, जबकि वह इस समय वे उसे किराया नहीं दे सकती है। फरीन के पास उसका बैंक अकाउंट है, लेकिन उसमें अभी तक स्कूल का कोई पैसा नहीं आया है। उससे भी उन्हें बहुत समस्या हो रही है। अभी इस समय वह खिचड़ी खा कर गुजारा कर रहे हैं।

फरीन बहुत समझदार लड़की है। इन दिनों में वह अपने भाई–बहनों का ध्यान रख रही है, पर उसकी मम्मी बेहद परेशान है। कारण उनके पास बहुत कम पैसे बचे हैं। आगे उनका गुजारा कैसे होगा इसकी चिंता उन्हें सताती है!

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

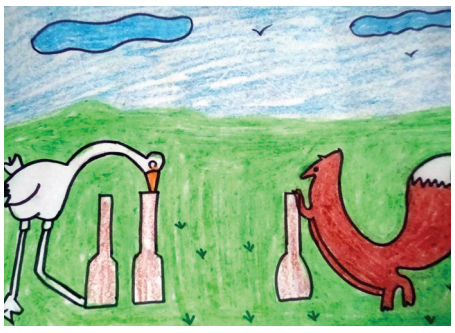

बढ़ता झुग्गी का किराया, कैसे भरपाई करेंगे

बातूनी रिपोर्टर सपिकुल

13 वर्षीय सपिकुल पश्चिम बंगाल की एक छोटे से गांव देबाग्राम का रहने वाला है। वह अपने परिवार के साथ चार एक साल पहले गुरुग्राम, हरियाणा में रहने के लिए आया था। सपिकुल ने बताया कि उनका गावँ में गुजारा बडी दिक़्क़त से चलता था। इसलिए उसका परिवार काम की तलाश में यहाँ आ गया।

वह गांव में दूसरी कक्षा में पढ़ता था, लेकिन गुरूग्राम आने के बाद उसकी पढ़ाई छूट गई थी। हिन्दी पढ़ना–लिखना नहीं जानता था। सपिकुल कुछ समय गुरुग्राम में रहने के बाद वहां के लोगों से मिलने–जुलने के बाद धीरे-धीरे हिन्दी बोलना सीख गया। उसने बताया कि उसके पापा का काम काम ठीक से नहीं चलने की वजह से उन्हें कई बार गांव आना–जाना पड़ता था। इसी कारण उसका किसी स्कूल में दाखिला नहीं हो पाया था। बाद में उसका एक सरकारी स्कूल में दाखिल हो गया है अभी वह छठी कक्षा में पढ़ता है।

लॉकडाउन की वर्तमान स्थितिः सपिकुल ने बताया कि लॉकडाउन मैं उनका परिवार का गुजारा बहुत ही मुश्किल से चल रहा है। उसके परिवार में कुल 6 लोग हैं। खाने के लिए राशन भी कम हैं। उसकी मम्मी घरेलू नौकरानी का काम करती है, लेकिन लॉकडाउन के काम पर नहीं जा पा रही है। मम्मी जहां काम पर जाती थी, वहां पर बहुत ही कम पैसा मिला है। परिवार का गुजारा करने में बहुत मुश्किल आ गई है। उसके पिता कबाड़ी का काम करते हैं। उनका काम भी नहीं चल रहा है।

सपिकुल ने बताया कि पिछले दिनों उसे स्कूल से कुछ राशन मिला था। चेतना संस्था द्वारा चलाए जा रहे कांटेक्ट पॉइंट की मैडम की मदद से भी उसे राशन मिला है। उसी से घर का गुजारा चल रहा है। वह उसके लिए मैं उनका बहुत-बहुत धन्यवाद देता है। हालांकि राशन हमें मिले हुए भी हफ्तों हो गए। उम्मीद है कि इस तरह की मदद और मिलेगी, क्योंकि अभी रमजान का महीना चल रहा है। सपिकुल का कहना है कि और उसके परिवार जैसे मजबूर दूसरे को भी ऐसी ही मदद मिले।

गुरुग्राम में और भी दूसरे तरह की दिक्कतें हैं। जहां उसकी झुग्गी है वहां जरा सी बारिश होने पर पानी और कीचड़ जम जाता है। शाम को बिजली नहीं रहती है। मेरे घर से कुछ दूर में पानी की टंकी है। वहां पानी भरने वालों की हमेशा बहुत ही भीड़ रहती है। लोग वहां पर पानी भरने के लिये आते हैं। वे लोगों से दूरी नहीं बनाते हैं। किसी की बात भी नहीं सुनते हैं।

कुछ कहने के बाद वह लोग आपस में लड़ाई–झगड़ा करने लग जाते हैं। झुग्गी के ठेकेदार किराए के लिए परेशान करना भी शुरू कर दिया है। इस कारण झुग्गियों में हमेशा पुलिस आती है। लोग उनसे शिकायतें करते हैं।

पुलिस लोगों को समझाती है। लोगों से दूरी बनाने के लिए कहते हैं। नाक–मुंह पर कपड़ा बांधने के लिए कहते हैं। किराया मांगने पर पुलिस से शिकायत करने पर उसका कहना होता है कि वे इसके लिए जरूर कुछ करेगी। लोग किराए के लिए तंग करने वाले ठेकेदार के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने की भी मांग करते हैं। झुग्गी के आसपास कई छोटी-छोटी दुकानें, जो बंद थी कुछ दिनों से खुलने लगी है। सब्जी की दुकानें भी रोजाना खुलने लगी हैं। लॉकडाउन होने के कारण रमजान में भी एक साथ नमाज नहीं पढ़ने की मनाही है। झुग्गी के ठेकेदार ने कहा है कि सबलोग अपने घर पर ही रह कर नमाज पढ़ें और ज्यादा भीड़ ना लगाएं।

दुकानों में सामान भी पहले से अधिक महंगे हो गए हैं। सपिकुल ने बताया कि इस लॉकडाउन में ठेकेदार की तरफ से भी उन्हें कुछ मदद मिली थी। जिससे लोकडाउन में उनका गुजारा आसानी से चल पाया। सपिकुल ने बताया कि कुछ दिन पहले कुछ लोग राशन देने आए थे।कुछ लोगो को राशन मिला है। कुछ लोगों को नहीं मिला, लेकिन अब वे राशन देने नहीं आ रहे हैं।

सपिकुल को एक और चिंता है कि वह लॉकडाउन की वजह से कहीं बाहर खेलने नहीं जा सकता है। उसे घर पर ही रहकर खेलना पड़ता है। पढ़ाई करनी पड़ती है। उसे स्कूल का होमवर्क भी व्हाट्सएप के माध्यम से ही मिलता है, जिसे वह करके वापस व्हाट्सएप के माध्यम से अपने सर को भेज देता है। वह दोस्तों से भी नहीं मिल पा रहा है। उसने कहा कि न जाने कब यह लॉकडाउन खुलेगा और कब वह स्कूल जा सकेंगे? कब उसकी मम्मी काम पर वापस जा सकेगी? कब उसके पापा का काम फिर चलेगा? कब वह घर के बाहर आराम से खेल सकेगा?

बच्चे सामना कर रहे कई समस्याओं का

बातूनी रिपोर्टर सोनम

परिचय एवं पारिवारिक स्थितिः 11 वर्षीय सोनम अपने माता–पिता और दो छोटे भाईयों के साथ दिल्ली के सराय कालेखां स्थित किराए के मकान में रहती है। वह स्कूल पढ़ने जाती है और सेन्टर में भी आकर पढाई करती है। सोनम अपने माता–पिता की इकलौती बेटी हैं। पिता दुकान में काम करते हैं, और माता की तबीयत ठीक नहीं होने के कारण वह घर में ही रहती है। मां घर का कामकाज करती है।

सोनम स्वभाव से शांत है, और समझदार भी। सबकी बात सुनती है, और मानती भी है। सोनम को पढ़ाई करने का बहुत ही शौक है। वह पढ़ने में भी अच्छी है। जीवन में सोनम बहुत ही आगे जाना चाहती है, लेकिन परिवार की दयनीय स्थिति के कारण उसके आगे बढ़ने में कई बाधाएं आ जाती हैं। नई समस्या कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन के आने से वह बहुत परेशान हो गई है।

लाकडाउन के बाद की स्थितिः सोनम इस समय अपने परिवार के साथ घर में रहती है। घर का बहुत सारा काम करती है, क्योंकि मां की तबीयत सही नहीं रहती है। वह घर पर ही रहकर माता–पिता की मदद करती है, और पढ़ाई भी कर रही है। कुछ समय मिलता है तब वह अपने दोनों छोटे भाईयों के साथ खेल भी लेती है। कुछ समय टीवी देखकर अपना समय व्यतीत कर ले रही है, लेकिन उसे हमेशा घर में रहना अच्छा नहीं लगता है।

इस समय परिवार में लाकडाउन को लेकर बहुत परेशानी चल रही है। पापा का काम तो बिल्कुल ही बंद हो गया है। मालिक ने पैसे भी नहीं दिए है। अभी तक तो जो सामान और पैसे थे उनसे काम चला। अब उसके खत्म होने से परेशानी और भी बढ़ गई है।

सोनम ने घर की परेशानियों के बारे में बताया कि कैसे उसने कुछ दिनों तक खाना स्कूल से लाकर खाया। वहां का खाना भी कई बार बहुत ही तीखा और अधा पका हुआ होता था। जिसे खाकर उसके पेट में परेशानी होने लगी थी। मां की तबीयत ठीक नहीं रहने के कारण वह खुद खाना लेने जाती थी। स्कूल में खाना लेने के लिए लंबी लाईन में लगना पड़ता था। छोटी होने की वजह से बहुत थक जाती थी। इस कारण उसने स्कूल से मिलने वाला खाना लाना बंद कर दिया।

परेशानी बढने लगी, आखिर कितने दिनों हम भूखे रहते। फिर उसके पापा ने कुछ पैसे किसी से उधार मांगे, लेकिन कोई मदद नहीं मिली।

कुछ दिनों बाद पास में ही नेपाल देश के द्वारा चलाए जाने वाले ईसाई धर्म संस्था के कार्यकताओं ने राशन देने में मदद की। उसकी बदौलत घर में थोड़ा राशन आया। परिवार में उसी से काम चल रहा है। उसमें भी मुश्किल आ रही है।

सोनम ने बताया कि सभी केवल एक ही समय भर पेट खाना खा पाते हैं। बाकी समय पानी पीकर काम चला रहे हैं। वह चिंता जताती है कि हम बड़े लोगों का तो ठीक है, लेकिन छोटे बच्चों को कैसे समझाएं, जो सिर्फ दूध पर ही निर्भर है। पास में पैसे नहीं है, कि उनके लिए दूध खरीद कर ला सकें।

चूंकि हम किराये के मकान में रहते हैं और हमारा किराये का बोझ भी बढ़ता जा रहा है। मकान मालिक ने अभी तो किराया नहीं मांगा है, लेकिन बाद में लेने को बोला है। जहां हमारे पास खाने के लिए पैसे नहीं हैं। वहाँ हम इतना किराया कैसे दे पाएंगे। इसकी चिंता पापा को सताती रहती है। हमें तो कहीं से भी राहत नहीं मिल रही है। बस यही सोच कर मन परेशान हो जाता है कि कब तक ऐसी ही परेशानी का सामना करना पड़ेगा? और कैसे हमारी परेशानी खत्म होगी? हमारी मदद कोई नहीं कर रहा है। जितनी बार लोगों के पास पैसे उधार लेने जाती हूं, तो हर बार निराशा का सामना करना पड़ता है।

मम्मी कहती है अब अपना काम कैसे चलाऊं? कौन बार–बार हमारी मदद करेगा? बहुत परेशानी हो रही हैं। सब कुछ कब सही होगा और कब इस परेशानी से छुटकारा मिलेगा? बस यही सब सोचने के लिए मजबूर हो जाती हूँ। हम सभी चाहते हैं कि जल्दी ही ये सब परेशानी खत्म हो जाए और सब कुछ पहले जैसा हो जाए।

देश के प्रधानमंत्री जी कहा कि लॉकडाउन का पालन करो वो तो हम सभी कर रहे हैं! घर में रहकर अपनी सुरक्षा भी कर रहे हैं, लेकिन इसके साथ ही हम रोज अनेकों परेशानी का सामना भी कर रहे हैं।

पढ़ाई नुकसान की चिंता में घुलते बच्चे

कब खत्म होगी मुसीबतें!

बातूनी रिपोर्टर नंदिनी

परिचय एवं पारिवारिक स्थितिः नौ वर्षीय नंदनी डालीगंज पुल के निकट मनकामेश्वर मंदिर, लखनऊ में रहने वाले परिवार के साथ रहती है। चार सदस्यों के परिवार में उसके अलावा माता-पिता और एक छोटी बहन है। नंदिनी के पिता मजदूर हैं। जो भी छोटा–मोटा काम काम मिलता है वे कर लेते हैं। उन्हीं पैसों से घर का खर्च चलाते हैं। कभी-कभी काम नहीं मिलने की वजह से उनको घर पर ही बैठना होता था। नंदनी की मां एक गृहणी है। सारे घरेलू काम उन्हीं की जिम्मेदारी है। घर की आर्थिक हालात ज्यादा अच्छे नहीं है। इसकी परेशानी से उन्हें जूझना पड़ता है।

लॉकडाउन के बाद की स्थितिः नंदनी इस समय अपने परिवार के साथ सारा दिन घर पर ही रहती है। घर में मां की थोड़ी–बहुत मदद करती है और कुछ टाइम पढ़ाई भी कर लेती है। पढ़ाई के लिए बहुत ही कम सामान है। दो किताबें, दो कॉपी और पेंसिल और घिसा हुआ रबड़ है। थोड़े से साधन में काम चलाती है। क्योंकि बाहर कोई सामान नहीं मिलता है, और न ही घर पर कोई ज्यादा पढ़ा–लिखा है, जो नंदनी को पढ़ा सके। जबकि नंदनी बहुत ही समझदार और होशियार लड़की है। इस लॉकडाउन के समय वह अपनी मम्मी–पापा की समस्याओं को देखती, समझती और महसूस करती है। जितना बन पड़ता है उनका सहयोग करने की कोशिश करती है। नंदनी कोई भी फालतू खर्च नहीं करती है। और ना ही मम्मी–पापा से किसी चीज की जिद करती है। वह जानती है कि घर में जो पैसे थे, वे धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं। राशन भी धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।

लॉकडाउन शुरू होने के समय में ही कुछ लोग राशन दे गए थे। वह राशन अब धीरे–धीरे खत्म होने को है। लॉकडाउन बढ़ा दिया गया, लेकिन तब से कोई नहीं आया है। अब आगे हमलोग क्या करेंगे, इसकी चिंता सभी को है। पापा भी बाहर कमाने नहीं जा पा रहे हैं। पापा के बैंक अकाउंट में भी पैसे नहीं आए हैं।

नंदिनी को इतना पता है कि लॉकडाउन में कुछ नियमों का पालन करना है। इस बारे में पूछने पर बताती – मुझे जो नियम बताए गए हैं मैं उनका पालन कर रही हूं। घर पर ही रहती हूं। मुंह औन नाक को मास्क लगाकर ढंक लेती हूं। हाथ साबुन से धोती हूं। परिवार के अन्य सदस्यों को भी नियमों का पालन करने पर जोर देती हूं।

इसी के साथ नंदिनी अपनी एक चिंता बताती है। वह कहती है– मेरा पढ़ाई का नुकसान हो रहा है। मैं स्कूल नहीं जाती हूं। आपके पास ही पॉइंट पर पढ़ने आती थी। घर पर भी पढ़ाई के लिए ज्यादा सामान नहीं है। अब तो पैसे भी धीरे-धीरे खत्म हो रहे हैं। कब तक ऐसे ही परेशानियों का सामना करना पड़ेगा? यह सब कब सही होगा? हम चाहते हैं कि जल्द से जल्द यह परेशानी खत्म हो जाए और सब कुछ पहले जैसा हो जाए। इसके लिए हम लॉकडाउन के सभी नियमों का पालन कर रहे हैं। और घर में रहकर अपनी सुरक्षा कर रहे हैं ।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

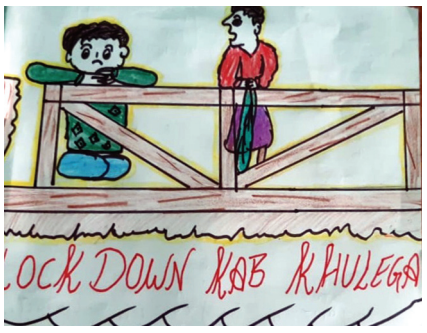

लॉकडाउन की मुश्किल परिस्थिति में

बच्चों की समझदारी को सलाम

बातूनी रिपोर्टर प्रीति

परिचय एवं पारिवारिक स्थितिः 10 वर्षीय प्रीति लखनऊ विनायक पुरम में रहती है। स्वभाव से चंचल लड़की है, और काफी समझदार भी। परिवार की समस्याओं को बाखूबी समझती है। परिवार के साथ मिलकर सभी जिम्मेदारियों को निभाती भी है। पढ़ाई में उसका मन लगता है। वह स्कूल जाती है। कक्षा दो की छात्रा है और उसकी एक बहन पहली कक्षा में पढ़ती है। दूसरा भाई भी कक्षा दो में पढ़ता है, जबकि उसका बड़ा भाई कुलदीप हमारे सेंटर में पढ़ने आता है।

प्रीति को जो भी बताया जाता है, उसे वह ध्यान से सुनती और समझती है। उसके साथ-साथ प्रीति बहुत नटखट भी है। बाल–सुलभ शैतानियां करने से बाज नहीं आती है। लॉकडाउन के दौरान उसने गजब की समझदारी का परिचय दिया।

प्रीति अपने परिवार में कुल 6 सदस्यों के साथ रहती है, जिसमें उसके माता–पिता, वह खुद और उसकी एक बहन और दो भाई हैं। प्रीति की मां घरों मै झाड़ू–पोछा का काम करती है। प्रीति के पिता रिक्शा चलाने का काम करते हैं। परिवार का जीवनयापन प्रीति के माता–पिता की कमाई से होता है।

लॉकडाउन के बाद की स्थितिः कोरोना वायरस से बचाव के लिए किए गए इस लॉकडाउन के समय में प्रीति अपने परिवार के साथ घर पर ही रहती है। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण उसे और उसके परिवार को बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लॉकडाउन की वजह से प्रीति के पिता का रिक्शा चलाने का काम बंद हो चुका है। मां के झाड़ू–पोछे का काम भी बंद है। इस समय सभी दिनभर घर पर ही रहते हैं।

घर में पैसों की तंगी के कारण उन्हें बहुत परेशानी हो रही है। उनके पास कमाई का कोई जरिया नहीं है। सब चीजें बंद चल रही हैं और प्रीति के घर में कैद जैसी जिंदगी जीने को मजबूर। लॉकडाउन की शुरूआत में ही उसकी मम्मी ने कोठी से दो महीने का एडवांस ले लिया था। वह अब खत्म होने को है।

घर का सामान लाने के लिए पापा के पास पैसे भी नहीं है। सरकार की तरफ से उन्हें राशन मिला था। राशन कार्ड से 20 किलो अनाज मिला। कुछ दिन उसी से गुजारा चला। धीरे–धीरे वो भी खत्म हो गया। अब उनकी चिंता है कि आगे के दिन कैसे कटेंगे?

उनके पास सब्जी, दाल या दूसरी जरूरी चीजें खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। जिससे उधार मांगते थे, उन्होंने भी उधार देना बंद कर दिया है। कम्युनिटी में जो लोग मदद करने के लिए आते थे उन्होंने भी आना बंद कर दिया है। उनको थोड़ा–बहुत सामान मिल जाता था। उनकी बातों से पता चला कि वह घर में कभी नमक–रोटी, तो कभी चटनी–रोटी या चटनी–चावल खाकर दिन बिता रहे हैं। जैसे–तैसे दाल या सब्जी कभी–कभार बन जाती है। वह भी तब जब किसी से उधर में 50–100 रुपए मिल जाते हैं।

इस लॉकडाउन की स्थिति में आमदनी का कोई जरिया नहीं है, जिससे वह सब्जी, दाल और कोई सामान खरीद सके। प्रीति अपने घर पर ही रहती है। अपने भाई–बहन के साथ मिलकर पढ़ाई करती है। उनको पढ़ाती है और उनके साथ खेलती भी है।

उनके घर में टीवी नहीं होने के कारण वे लोग बोर भी हो जाते हैं। कभी-कभी बगल में पड़ोसी के यहां टीवी देखने चले जाते हैं। जिस कारण उनको अपने पापा से डांट भी खानी पड़ती है। प्रीति अपने घर में मम्मी का काम में हाथ बंटाती है।

हाल के दिनों में आए आंधी–तूफान से उनके घर में बहुत ज्यादा धूल मिट्टी भर गई थी। आसपास कीचड़ हो गया था। पानी बरसने के कारण बहुत समस्या हो गई थी। प्रीति और उसके भाई–बहन समझदारी दिखाते हुए अपने घर की साफ–सफाई कर डाली। इसमें मम्मी– पापा का हाथ बंटाया। घर का कोना–कोना साफ किया, ताकि उनको इस लॉकडाउन की स्थिति में किसी भी प्रकार की बीमारी का सामना ना करना पड़े।

सरकार से किराया देने की मांग करता परिवार

बातूनी रिपोर्टर समीर

परिवारिक जानकारीः11 वर्षीय समीर के परिवार में कुल 4 सदस्य हैं। इनका परिवार पहले पश्चिम बंगाल में रहता था। बेरोजगार होने के कारण गुरुग्राम में आ गया। अब इन्हें यहां लगभग तीन साल हो गए हैं। यहाँ इसकी मम्मी–पापा कोठियों में हाउसकीपिंग का कार्य करते हैं। समीर घर पर रहकर अपने छोटे भाई की देखभाल करता है।

लॉकडाउन की स्थितिः लॉकडाउन की वजह से इसकी मम्मी और पापा काम पर नहीं जा पा रहे हैं, जिससे उनके पास पैसे भी नहीं हैं। उनके पास राशन खारीदने तक के पैसे नहीं हैं। यह परिवार किराए की झुग्गी लेकर रहता है। पैसा नहीं होने के कारण वे अपनी झुग्गी का किराया भी नहीं दे पा रहे हैं।

समीर घर पर रहते हुए लूडो खेलकर मन बहला लेता है। कभी-कभी पढ़ाई करता है। समीर स्कूल जाने के लिए अपने स्कूल में दाखिला लेने का इंतजार कर रहा है कि कब यह लॉकडाउन खत्म होगा और वह स्कूल जा पाएगा। वह घर पर रहकर साफ–सफाई का विशेष ध्यान रखता है। लोगों को भी साफ–सफाई के बारे में बताता है।

लॉकडाउन में इनकी मदद करने के लिए सरकार द्वारा इनके लिए राशन भेजा जाता है, जिससे लोग यहां अपना गुजारा कर रहे हैं। अभी इन्होंने घर की स्थिति संभालने के लिए अपने मालिक से कुछ उधार रुपए भी लिए हैं। लॉकडाउन में इन्होंने दुकान से भी राशन उधार लिया हुआ है। इस समय समीर के माता–पिता रमजान का रोजा भी रख रहे हैं। वे सरकार से कुछ पैसों की मदद चाहते हैं, जिससे वे अपनी झुग्गी का किराया दे सकें। अपना गुजारा कर सकें। वे आगे का गुजारा किस प्रकार से करेंगे, इस बात की चिंता सताती है।

दादी के अंतिम संस्कार में नहीं मिली जाने की अनुमति

बातूनी रिपोर्टर विकास

परिचय एवं पारवारिक स्थितिः विकास 13 साल का है। वह अपने परिवार के साथ नोएडा के सेक्टर 126, रायपुर गांव स्थित एक किराये के कमरे में रहता है। वे मूल निवासी सीतामढ़ी, बिहार में एक गांव के हैं। पिता लेबर का काम करते है। मां कम्पनी में साफ–सफाई का काम करती है। विकास पैर से विकलांग है। लड़खड़ाकर किसी तरह से चल लेता है। उसके दो भाई और दो बहनें हैं।

सभी सरकारी स्कूल में पढ़ने जाते हैं। विकास भी अपने भाई–बहन के साथ पैदल ही स्कूल जाता है। वह 5वीं क्लास में पढ़ता है। विकास बचपन से ही विकलांग है। उसे चलने में बहुत परेशानी होती है। फिर भी विकास स्कूल से आने के बाद चेतना संस्था के सेंटर पर भी पढ़ने आता है। उसे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

लॉकडाउन के बाद की स्थितिः कोरोना महामारी बचाव के लिए लॉकडाउन के दौरान फोन के माध्यम से विकास से बात हुई। विकास ने बताया– मैं अपने परिवार के साथ घर पर ही रहता हूं। घर पर रहकर ही पढ़ाई करता हुं। कुछ समय टीवी भी देख लेता हूं। अब मैं बाहर नहीं जाता हूं। घर में बैठे रहने से पैर मैं दर्द होता है। शरीर बहुत दुखता है। घर मैं हम 7 लोग रहते हैं। बहुत गर्मी लगती है। पहले तो बाहर भी बैठ जाते थे और पार्क में भी घूमने चले जाया करते थे। अब लॉकडाउन की वजह से हमें घर में ही रहना पड़ता है।

उसने अपने परिवार की माली हालत के बारे में फोन पर बताया कि मम्मी और पापा दोनों ही काम पर नहीं जा रहे हैं। उसने कहा– पहले जब 21 दिन का लॉकडाउन लगा था तब हमने एक–एक दिन बहुत मुश्किल से काटा था। पास के दुकान से राशन उधार लिया था। उसके बाद जब 19 दिन का फिर लॉकडाउन हो गया, तो हमारे घर में राशन की बहुत परेशानी हो रही हैं। चेतना संस्था द्वारा राशन मिला था वह भी खत्म होने वाला है।

विकास ने चेतना संस्था के बारे कुछ और बातें बताईं। उसने कहा– चेतना संस्था द्वारा ब्रॉडकास्ट ग्रुप बना है। उसमें दिए गए हेल्पलाइन नंबर पर भी फोन किया था, लेकिन वहां से भी कोई मदद नहीं मिली है। हम बहुत परेशान हैं।

उसने बताया कि उन्हीं दिनों गांव से चाचा का फोन आया था। हमारी दादी का देहांत हो गया है। हमें बिहार जाना जरूरी हो गया था। पापा ने वहां की बिहार पुलिस से बात की। उन्होंने कहा कि हमें सूरजपुर से डीएम के यहां से। मेरे पापा सूरजपुर गए। वहां पर सिर्फ तीन लोगों को ही गांव जाने का परमिशन मीला। उन्होंने एम्बुलेंस में जाने के लिए कहा। इसके लिए 30,000 हजार रुपए मांगे। किंतु हमारे इतने पास पैसे भी नहीं थे।

हम अपनी दादी के अंतिम संस्कार में भी नहीं जा पाए। हम अब इन्तजार कर रहे है कि कब ये लॉकडाउन खत्म होगा और हम अपने गांव जा पाएंगे। मम्मी घर मे रोती रहती है। घर में राशन भी नहीं है। कोई सही से खाना भी नहीं खाता है। किसी काम मैं मन भी नहीं लगता है।

मुश्किलों से जूझते परिवार में बच्चे की पीड़ा

बातूनी रिपोर्टर पिंकी

पारिवारिक स्थितिः 14 वर्षीय पिंकी अपनी बड़ी बहन और बड़े भाई के साथ विनायक पुरम झुग्गी में रहती है। वह सरकारी स्कूल में पढ़ती है। उसके पिता साड़ियां बेचने का काम करते हैं। मां घरों में साफ– सफाई का काम करती है, जबकि बड़ी बहन और भाई भी छोटे–मोटे काम पर जाते हैं। पिंकी प्रखर बुद्धि की छात्रा है। वह स्कूल और सेंटर नियमित रूप से जाती है।

लॉकडाउन के बाद की स्थितिः पिंकी से फोन पर बात होती है और उसके बड़े भाई से भी। पिंकी के परिवार की स्थिति बेहद दयनीय है, क्योंकि उसके परिवार में कोई भी सदस्य ऐसा काम नहीं करता, जो इस स्थिति में भी चलता रहे। वे सभी मजदूर वर्ग के कामकाजी लोग हैं। रोज कमा कर अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं। माँ और बहन, जो घरों में साफ–सफाई करती हैं, वो भी इस समय नहीं जा पा रहीं हैं।

सरकारी सहायता के नाम पर भी उनके हाथ कुछ नहीं लग रहा, क्योंकि उनके पास उचित दस्तावेजों की कमी है। उनके पिता उधार मांगकर काम चला रहे हैं, लेकिन वह भी अब मुश्किल हो गया है। जैसे–जैसे लॉकडाउन के दिन बढ़ते चले गए, वैसे–वैसे मदद करने वाले भी पीछे हटते चले गए। ब्याज पर भी कोई साहूकार पैसे नहीं देता है। उन्हें लगता है कि ये लोग पैसे कहां से चुकाएंगे। उस बच्ची की आवाज में पीड़ा साफ झलकती है। भाई अपना दर्द बयां करते–करते रो भी पड़ता है।

कम्यूनिटी किचन से भी हर रोज खाना नहीं मिल पाता है। जो लोग खाना बांटने आते हैं वे भी उन तक नहीं पहुंच पाता, क्योंकि उनकी झुग्गी अंदर है। खाना बांटने वाले अचानक कभी भी आकर बाहर–बाहर से चले जाते हैं। पिंकी और उसके भाई जबतक भागकर उन तक पहुंचने की कोशिश करते हैं, तब तक वे चले जाते हैं। पिछले दिनों की बात है।

अचानक बारिश होने के कारण उनकी स्थिति और दयनीय हो गई। झुग्गियां अस्त–व्यस्त हो गई। भीतर पानी भर गया। जो कुछ बचा समाना था वह भी बर्बाद हो गया। पूरा परिवार और भी परेशान हो गया।

अब उनके सामने एक और समस्या आकर खड़ी हो गई। पिंकी हमारी ओर से भेजी गई चीजों से खुद को ढ़ाढस बंधाती है और पढ़ने में मन लगाती है। उसका कहना है कि वह इस काबिल बन जाए, जिससे भविष्य में इसके परिवार को कभी ऐसी परिस्थिति का सामना नहीं करना पड़े। ईश्वर उसे ताकत दे अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए।

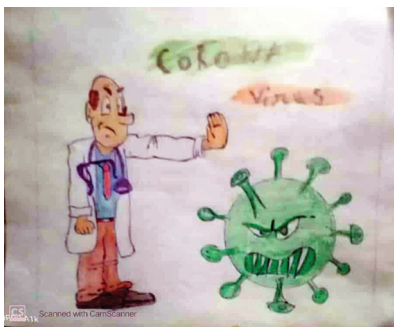

पैसे का अभाव, मालिक ने मजदूरी देने से किया इंकार

बातूनी रिपोर्टर फरदीन

परिचय एवं पारिवारिक स्थिति : 11 वर्षीय फरदीन अपने माता-पिता के साथ सराय काले खां मुसद्दी चौक पर किराए के मकान में रहती है। फरदीन के परिवार में उसके माता-पिता, दो बहनें और एक भाई हैं। उसके पिता पहले सिलाई का काम करते थे, परंतु सिलाई का काम अधिक नहीं आने के कारण उन्होंने दिहाड़ी मजदूरी का भी काम शुरू कर दिया था। उससे होने वाली साधारण आय से ही घर का खर्च चलता है। फरदीन की मम्मी घर पर ही रहती है और बच्चों की देखभाल करती है। वह घर का सारा काम करती है। फरदीन स्कूल पढ़ने जाती है। वह सपनो के आंगन सेंटर में भी पढ़ने आती है। फरदीन पढ़ाई में बहुत अच्छी है और स्वाभाव से मिलनसार भी है। सेंटर की सभी कार्यक्रमों में भाग लेती है। कविता पाठ करना उसे बहुत अच्छा लगता है।

लॉकडाउन के बाद की स्थिति: फरदीन लॉकडाउन के बाद अपने परिवार के साथ घर में ही समय बिताते को मजबूर है। घर में रहकर अपनी मम्मी की मदद करती है। उसने बताया कि लॉकडाउन के बाद पापा घर में ही हैं। वे बिल्कुल खाली रहते हैं। उनके पास काम बिल्कुल भी नहीं है। घर में खाने के पैसे भी खत्म हो गए हैं। हमारा रमजान का त्यौहार भी है। पहले हम रमजान में फल और अच्छे पकवान बनाकर रोजा खोलते थे, परंतु अब स्थिति बहुत खराब हो गई है। घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं है। लगता है रमजान का त्यौहार रोटी चटनी खा कर ही खोलना पड़ेगा।

फरदीन ने बताया कि गांव वाले चौक पर स्कूल से खाना लेने गए थे। वहां पर बहुत लंबी लाइन थी और खाना एकदम उबला हुआ एकदम से फीका था। वह खाना हमें अच्छा नहीं लगता है। फरदीन ने आगे बताया कि मम्मी पड़ोसी से 200 रुपये उधार मांग कर लाई थी। उस पैसे थोड़ा बहुत खाने का सामान भरा था। तब हमने चटनी–रोटी बनाकर खाई थी।

फरदीन नाराजगी से बताती है– हमें राशन भी नहीं मिलता है। बस एक बार ही राशन मिला था। वह भी हमारा राशन कार्ड है, उसमें हमें गेहूं और चावल मिले थे। फरदीन ने बताया हमारे पास गेहूं पिसवाने के पैसे भी नहीं हैं। हमें घर खर्च चलाने के लिए बार-बार पैसे उधार मांगने पड़ते हैं। हमारे परिवार में कुल 5 सदस्य हैं और हमें सिर्फ 4 किलो चावल मिले। वह ज्यादा दिन नहीं चलते। इतने से चावल में हम कितने दिन खाएंगे?

पड़ोसी भी उधार देने के लिए मना करते हैं हमारे ऊपर कर्ज भी बहुत हो गया है। फरदीन ने चेतना संस्था से कुछ पैसों की मदद भी मांगी है, जिससे रमजान का त्यौहार ठीक से बन जाए। फरदीन ने बताया मकान का किराया भी बढ़ता जा रहा है। इस कठिन परिस्थिति में पापा का मालिक उनकी मजदूरी के पैसे भी नहीं दे रहा है। जिसके यहां नियमित काम करते हैं वह कहता है लॉकडाउन के बाद ही पैसे मिलेंगे।

फरदीन ने दुःखी मन से कहती है– दीदी घर चलाने में बहुत परेशानी हो रही है। आगे की जिंदगी को लेकर बहुत चिंता होती है। लॉकडाउन में सुबह छत पर जाकर योगा करती है। अपने भाई के साथ खेलती है। अपने स्कूल की किताबें पढ़ती है। वह अपने भाई की पढ़ाई करने में मदद करती है। फरदीन ने बताया वह प्रतिदिन टीवी पर न्यूज भी सुनती है। फरदीन आशावान है। वह कहती है हमारे अच्छे दिन जरूर आएंगे। उसने बताया कि वह इस कठिन परिस्थिति में लॉकडाउन का पालन बहुत अच्छे से कर रही है।

सड़कों पर गुजरती बच्चों की जिंदगी, सुविधाओं से वंचित

बातूनी रिपोर्टर रुस्तम

परिचय एंव परिवारिक स्थिति: 15 वर्षीय रुस्तम सराय काले खां में रहता है, लेकिन लखनऊ का रहने वाला है। रुस्तम का परिवार काफी सालों से दिल्ली के कई अलग–अलग इलाकों मे रह चुका है। उसका किराए के कमरे या झुग्गी जैसा भी कोई ठौर–ठिकाना नहीं है। लॉकडाउन होने के समय रुस्तम अपने परिवार के साथ दिल्ली के सराये काले खाँ रैन बसेरे में रह रहा है।

परिवार में माता–पिता के अलावा दो भाई तीन बहनें हैं। उसके पिता एंव बहनें भीख माँगने का काम करती हैं। रुसतम की माता घर पर ही रहती हैं और छोटे बच्चों की देखभाल करती है। अब बच्चों ने माँगने का काम छोड़ दिया है। वे सेवेन वंडर के बाहर कभी पानी की बोतल बेचते हैं या तो कभी चाय बेच कर अपने परिवार की आर्थिक मदद करते हैं।

रुस्तम काफी अच्छा और समझदार है, लेकिन पढ़ने में थोड़ा कमजोर है। उसके पास फोन है, लेकिन बंद होने के कारण उसके पड़ोस के दूसरे के फोन से बात हो पाई है!

लाँकडाउन के बाद की स्थिति: लॉकडॉउन के कारण इनके परिवार में से कोई भी व्यक्ति अपने काम पर नही जा पा रहा है। शुरूआत में तो जो इनलोगों ने पहले से जमा किए हुए पैसे थे, उन्हीं से अपना घर चलाया धीरे–धीरे वह पैसे खत्म हो गए हैं। लॉकडाउन भी बढ़ गया है, जिसकी वजह से इन लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उनकी ज्यादातर जिंदगी सड़कों पर गुजरती है।

रुस्तम ने बताया कि उनका राशन कार्ड नहीं हैं, और ना ही बैंक एकाउंट है। जिससे उन्हें सरकार की किसी भी योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है। यहां लोग रैन बसेरे में बंटने वाले खाने से अपना गुजारा कर रहे हैं। उसने बताया कि बंटने वाला खाना खाने का मन नहीं करता, लेकिन मजबूरी में इससे काम चलाना पड़ रहा हैं। यहाँ पर मिलने वाले खाने में चावल अधपके होते हैं। बच्चों ने बताया कि बारिश में उनकी मुश्किलें और बढ़ जाती हैं, क्योंकि उनका सभी सामान बाहर रखा रहता है। उसे बार-बार अंदर–बाहर करना पड़ता है।

बच्चे ने बताया कि संस्था द्वारा दिए गए राशन से इन्हें काफी मदद मिली है, जिसके लिए उनका परिवार संस्था को बहुत धन्यवाद करता हैं। वे लोग लॉकडाउन के सभी नियमों का पालन कर रहे हैं और अपने रैन बसेरे में ही रह कर समय व्यतीत कर रहे हैं।

राशन कार्ड की बदौलत ही मिला सरकारी राशन

बातूनी रिपोर्टर किशन

परिचय एवं पारिवारिक स्थिति: 14 वर्षीय किशन अपने परिवार के साथ नेहरू कैम्प में रहता है। परिवार में कुल 5 सदस्य हैं। किशन के माता–पिता, वह खुद और उसके 2 छोटे भाई। हालांकि इन दिनों घर में केवल 4 सदस्य ही हैं, क्योंकि लॉकडाउन की वजह से उसकी मां गांव में ही फंसी हुई है। वह दिल्ली वापस नहीं आ पाई है। किशन के पिता फर्नीचर पर पॉलिश का काम करते हैं, जबकि उसकी मां घर पर ही रहती है। वह अपने घर का कामकाज संभालती है।

किशन सब्जी बेचने का काम करता है। वह रोज सुबह सब्जी मंडी जाता है और वहां से थोक के भाव सब्जी खरीद लाता है। अपने यहां नेहरू कैम्प में रेहड़ी पर सब्जी बेचता है। जो पैसे कमाता है उससे परिवार की आर्थिक मदद हो जाती है। बड़ी कठिनाई से इनलोगों का जीवनयापन हो पाता है।

किशन ने सरकारी स्कूल में छठी कक्षा तक पढ़ाई की है और वह सातवीं क्लास में सिर्फ एक महीना ही स्कूल गया। फिर उसने पढ़ाई छोड़ दी। वैसे किशन पढ़ाई में बहुत अच्छा था।

लॉकडाउन के बाद की स्थिति: लॉकडाउन की वजह से किशन के पिता काम पर नहीं जा पा रहे हैं। नतीजा उसके घर पर पैसों का अभाव हो गया है। किशन ने बताया कि उसका काम बंद नहीं हुआ है। वह सब्जी मंडी से सब्जी खरीद कर ले आता है। सब्जी बेचकर जो भी थोड़े पैसे मिलते हैं उससे अपने घर का खर्च चलाने में पिता की मदद कर पा रहा है।

किशन ने बताया कि उसे इन दिनों सब्जी मंडी में पहले से थोड़ा महंगा मिल रहा है। यह तो अच्छा है कि उसका राशन कार्ड है, जिससे उसे राशन भी मिल गया है।

उसके माता और पिता का जीरो बैलेंस अकाउंट है, लेकिन उन्हें पता नहीं है कि उनके अकाउंट में पैसे आये हैं या नहीं। किशन ने बताया कि उसके घर में से कोई भी बैंक नहीं गया है।

चेतना कार्यकर्ता ने किशन को बैंक जाकर पूछताछ करने की सलाह दी। जब चेतना कार्यकर्ता ने किशन से पूछा कि कोई कर्ज तो नहीं लिया? इसपर किशन ने बताया कि उसने कहीं से कोई कर्ज नहीं लिया है, क्योंकि उसके पापा के मालिक अच्छे व्यक्ति हैं। वे खर्च के लिए कुछ पैसे पहले ही दे चुके थे। उसी से लॉकडाउन में काम चल रहा है।

इसके साथ ही समय गुजारने के बारे में किशन ने बताया कि वह टी वी देखकर, फोन चलाकर या घर के काम में हाथ बंटाकर अपना समय व्यतीत कर लेता है। वह अपने छोटे भाइयों की देखभाल भी करता है। वे लोग लॉकडाउन के सभी नियमों का पालन कर रहे हैं।

एक समय खाना खाकर करना पड़ रहा है गुजारा

बातूनी रिपोर्टर अभिमन्यु

परिचय एवं पारिवारिक स्थिति: 13 वर्षीय अभिमन्यु बिहार का रहने वाला है। उसके पिता अर्जुन पासवान माता ममता है। दोनों लेबर का काम करते हैं। अभिमन्यु की एक छोटी बहन है।

लॉकडाउन के बाद की स्थिति: जब लॉकडाउन हुआ तब हमने अभिमन्यु के परिवार से फोन पर संपर्क किया। अभिमन्यु के पिता ने हमें बताया कि उनके पास जो राशन बचा है उसी से खाना–पीना चल रहा है। वह भी खत्म होने को है।

कुछ दिन बाद फोन पर उन्होंने बताया कि आथोरिटी की तरफ से लोग खाना बांटने आते हैं। उसी से किसी तरह काम चल जाता है। फिर कुछ दिन बाद उन्होंने बताया कि हमारे पास जो पैसा राशन था सब खत्म हो गया है। आथोरिटी से जो सहायता मिल पाती है उसी से गुजारा हो पा रहा है, लेकिन वहां हमे सिर्फ दो समय का ही खाना मिलता है। किसी दिन एक ही समय खाना आता है। ऐसे में हमें एक ही समय खाकर रहना पड़ता है। बच्चों को तो चाय और दूध भी चाहिए, लेकिन हम उन्हें कुछ भी नहीं दे पाते। जैसा सरकार की तरफ से बोला जा रहा है कि साफ-सफाई का ध्यान रखें, लेकिन हमारे पास इतने पैसे नहीं है कि हम साफ–सफाई का सामान भी खरीद पाएं। गांव जाने में भी समस्या हो रही है। सुना है वहां पर 14 दिन टेस्टिंग के लिए रखकर गांव में जाने देते हैं। उसमें भी बहुत परेशानी है। यहां पर सरकारी गाड़ी से राशन बांटने लोग आए थे।

हमने उनसे राशन देने के लिए कहा। बिहार का राशन कार्ड और आधार कार्ड दिखा कर राशन मांगा तब भी हमें नहीं मिला। उन्होंने कहा कि यहां पर सिर्फ उन्हीं को राशन मिलेगा, जिनका राशन कार्ड और आधार कार्ड यहां का है। राशन की दुकान पर जहां राशन बंटता है वहां पर भी हम राशन कार्ड लेकर गए, लेकिन वहां दुकान भी बंद थी। वहां पर हमें कोई नहीं मिला। बार-बार नहीं जा पाते, क्योंकि पुलिस वाले मारते हैं। जाने नहीं देते। हमें समझ नहीं आता कि हम क्या करें? कोई रास्ता नजर नहीं आता।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

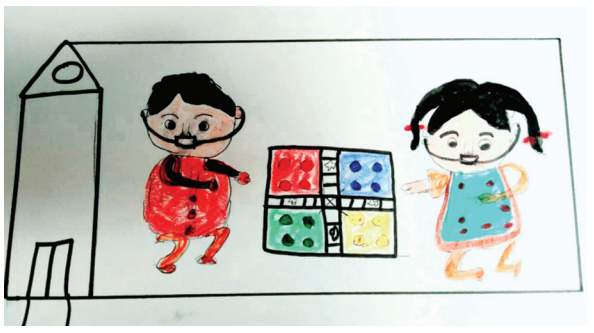

जनधन खाते में आए 500 रुपए, नहीं हुई पूरी निजी जरूरतें

बातूनी रिपोर्टर जन्नत

परिचय तथा पारिवारिक स्थिति: जन्नत एक 12 वर्षीय बालिका है। वह अपने परिवार के साथ सौरखा सेक्टर 116 की झुग्गी में रहती है।उसके पिता झुग्गी बनाने का काम करते हैं। मां कोठी में घरेलू नौकरानी का काम करती है। जन्नत पांच बहनें तथा एक भाई है। दो बड़ी बहनों की शादी हो चुकी है।

जन्नत बहनों में सबसे छोटी है और सरकारी विद्यालय में पांचवी कक्षा की छात्रा है। वह घर के कार्यों में भी मां का हाथ बंटाती है। समय निकालकर चेतना संस्था के पॉइंट पर भी पढ़ने आती है। उसका स्कूल में दाखिला चेतना संस्था द्वारा ही करवाया गया था।

लॉकडाउन की वास्तविक स्थिति: लॉकडाउन के दौरान फोन के माध्यम से जन्नत और उसके माता-पिता से बात हुई। उन्होंने बताया कि लॉकडाउन के कारण वे सभी घर पर ही बैठ गए हैं। क्योंकि किसी भी प्रकार का कोई काम नहीं है। कई परेशानियों से जूझ रही थी, इसलिए वेलोग अपने गांव हरदोई आ गए, जो नोएडा से ज्यादा दूर नहीं है। उन्होंने बताया कि वे पूरे दिन घर पर ही रहते हैं। जन्नत अपनी बहन और भाई के साथ खेलती–कूदती रहती है। घर के काम में भी हाथ बंटा देती है। थोड़ी पढ़ाई भी कर लेती हैं, लेकिन स्कूल नहीं जा पा रही हैं। यही बात जन्नत को काफी बुरी लग रही है। उसे पूरे दिन घर पर ही रहना जरा भी अच्छा नहीं लग रहा है।

एक बड़ी समस्या जन्नत की मां के सामने है। उन्होंने बताया– पैसों की काफी दिक्कत हो रही है। हमें पता ही नहीं था कि ऐसी परिस्थिति भी आ जाएगी, वरना हम थोड़ा पैसों की बचत करके रखते। अभी हमारे पास कोई बचत नहीं है। हमारा आधार कार्ड है, जिसकी बदौलत हमें दो महीने का राशन मिल गया है। जनधन खाता में केवल 500 रुपये ही आए, परंतु केवल राशन से और मात्र 500 से क्या होगा?

वह आगे कहती है– इतने बड़े परिवार को चलाने के लिए पैसों की भी तो आवश्यकता होती है। क्योंकि हमारा गैस सिलेंडर भी खत्म हो गया है। उसके लिए पैसे नहीं है। घर के दूसरे खर्चे होते हैं। जैसे दूध, सब्जी, तेल,साबुन आदि चीजें इन सबके लिए पैसों की आवश्यकता होती है। इस वजह से हमें काफी दिक्कत हो रही है। बच्चे भी इतने बड़े नहीं हैं जो कि सभी परिस्थितियों को समझें। वे भी अन्य चीजों की मांग करते हैं। तो हम उन्हें कहां से ला कर दें। रोज एक ही तरह का खाना खाकर वे भी उब चुके हैं।

उन्होंने बताया– पैसों की कमी के कारण अन्य ऊपरी खर्चों में भी काफी दिक्कत आ रही है। हम उज्ज्वला योजना से भी नहीं जुड़े हैं, इसलिए गैस सिलेंडर के लिए भी हमारे पैसे लगते हैं। जो सरकार की तरफ मिले 500 रुपये से कितने दिन खर्च चलेगा। इन पैसों से तो गैस भी नहीं आ पाएगी।

खराब खाना खाने की मजबूरी

बातूनी रिपोर्टर रोशनी

परिचय एवं पारिवारिक स्थिति: रोशनी अपने माता-पिता के साथ नोएडा के सेक्टर 45 में किराए पर रहती है। उसके पिता सफेदी का काम करते हैं, और मम्मी घर में रहती है। रोशनी घर के काम में मम्मी की थोड़ी–बहुत मदद कर देती है। वह चेतना सेंटर पर भी पढ़ने आती है।

लॉकडाउन के बाद की स्थिति: इस लॉकडाउन की वजह से रोशनी को उसके परिवार को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह आई कि उसके पापा का काम छूट गया है। घर में जो पैसे थे वे भी खत्म हो गए हैं। रोशनी की मां हर महीने दुकान से उधार राशन लेती थी और पति को पैसे मिलने पर दुकान वाले का हिसाब करती थी। जितने भी पैसे बनते थे दे देती थी।

इसी प्रकार से वह अपने घर का खर्च चलाती थी। इस लॉकडाउन के चलते पिछले महीने के कुछ पैसे ही दे पाई। दुकान वाले को कुछ पैसे उधार रह गए। घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण जब वह दुकान वाले के पास राशन लेने गयी तो उसने राशन देने से मना कर दिया। कहा कि पहले जो पैसे उधार है वह चुका दो। लॉकडाउन में दुकान का सारा राशन खत्म हो गया है। मैं आपको राशन नहीं दे पाऊंगा।

यह सुनकर रोशनी की मां को बहुत

पड़ोसी कर रहे मदद

दुख हुआ। उन्हें दुकान वाले से कोई मदद नहीं मिल पाई। अब मैं किससे मदद लूं। पेट भरने के लिए खाना तो चाहिए ही। उसके बाद रोशनी की मम्मी ने सोचा पड़ोसियों से थोड़ी पैसों की मदद ले लूं, ताकि घर में कुछ राशन आ जाए। उधार पैसे लेने में उन्हें संकोच हो रहा था, क्योंकि इससे पहले उन्होंने किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया था। खैर, जब वह पड़ोसियों से पैसों की मदद के लिए गई तो सभी ने उन्हें पैसे देने से मना कर दिया। उन्हें वहां से भी निराशा ही हाथ लगी।

अब रोशनी और उसका परिवार सरकार द्वारा जो खाना दिया जाता है उसपर गुजारा करने लगे। सोम बाजार में यह खाना दोपहर में एक बजे एक ही टाइम के लिए आता था। उसके लिए रोशनी की मम्मी को पहले ही लाइन में लगना पड़ता। खाने का स्वाद अच्छा नहीं होता। लेकिन रौशनी की मम्मी उसे यह खाना जबरन खिलाती है। वह कहती है कि बेटी को भूखी तो रख नहीं सकती न! इस तरह का खाना भी सभी को नहीं मिल पाता है। काफी लोग बिना खाये ही रह जाते हैं। खाना लेने वाले बहुत ज्यादा होते हैं। खाना कम होता है, जिस कारण हमें कभी–कभार खाना नहीं मिल पाता। उस स्थिति में कई बार रोशनी के लिए खाने का बंदोबस्त पड़ोसियों से लेकर करना पड़ता है। कोई ना कोई पड़ोसी उनकी मदद कर देते हैं।

रोशनी के परिवार को खाने की बहुत दिक्कत हो रही है। उसके पापा ने सोचा कि वे ठेकेदार से कुछ पैसे मांग लें, ताकि घर का खर्च चल पाए। वे ठेकेदार के पास गए, लेकिन उसने लॉकडाउन का बहाना बनाकर पैसा देने से इनकार कर दिया। उसने पैसे तो नहीं दिए, लेकिन उन्हें कुछ राशन दिलवा दिया। इस प्रकार उनके घर का खर्च किसी तरह से चल रहा है।

लॉकडाउन में रोशनी का घर पर मन नहीं लग रहा है। घर में टीवी भी नहीं है। उसके पापा के फोन में नेट चलाने के लिए पैसे भी नहीं है, जिससे वह कार्टून देख सके। गाने सुन सके। उसका कोई छोटी बहन या भाई भी नहीं है जिनके साथ घर में खेल सके। मनबहलाव कर सके।

रोशनी घर पर पढ़ाई भी नहीं कर पा रही है, क्योंकि उसके पापा पढ़े-लिखे नहीं है। रोशनी को सेंटर की बहुत याद आ रही है। सेंटर पर ही उसके बहुत सारे दोस्त थे। उनके साथ ही वह खेलती थी। पढ़ाई करती थी। रोशनी ने बताया कि उसका सरकारी स्कूल में दाखिला होने वाला था। लॉकडाउन के चलते नहीं हो पाया।

रोशनी चाहती है कि जल्दी से जल्दी यह लॉकडाउन खुल जाए। वह फिर से अपने दोस्तों के साथ खूब खेले, पढ़ाई करे और स्कूल जाए।

राशन का अभाव, खाने के लिए लंबी कतार

बातूनी रिपोर्टर शिवानी

परिचय एवं पारिवारिक स्थिति: 10 वर्षीय शिवानी अपने माता-पिता और दो भाई के साथ नोएडा, सफाबांद सेक्टर 73 में रहती है। चेतना द्वारा चलाया जा रहे गुरुकुल सेन्टर में आकर पढ़ाई करती है। पिता बेलदारी का काम करते हैं। मां कोठी में काम करने जाती है। वहीं से जो पैसे मिलते हैं उनसे अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण करती है। शिवानी शांत स्वभाव की है। समझदार भी है। सबकी बात सुनती है। मानती भी है। पढ़ने में ठीक है। अपने भाई के साथ रोजाना गुरुकुल सेंटर में पढ़ने के लिए आती है।

लाकडाउन के बाद की स्थितिः शिवानी लॉकडाउन के समय अपने परिवार के साथ सफाबांद में रह रही है। अपने माता-पिता के काम में थोड़ी–बहुत मदद कर देती है। अभी वह छोटी है, और घर का अधिक काम करना नहीं आता है। छोटे भाई के साथ ही खेलकर मन बहला लेती है। उसके घर के सामने एक चाचीजी रहती हैं। उनके घर में टीवी देखकर अपना समय व्यतीत कर लेती है। इस लॉकडाउन की वजह से अपने भाई के साथ खेलने के लिए बाहर नहीं जा पा रही है। इसलिए घर में उबी हुई महसूस करती है। टीवी देखकर ज्यादातर समय निकालती है। शिवानी यही सोचती रहती है कि कब लॉकडाउन खुलेगा और कब अपने भाइयों के साथ बाहर खेल सकेगी।

इस समय परिवार के सभी सदस्य लॉकडाउन को लेकर काफी परेशान हो रहे हैं। शिवानी की मां से बात करने से मालूम हुआ कि लॉकडाउन के चलते उसका काम भी छूट गया है। उन्होंने बताया– बड़े-बड़े घरों से कुछ लोग राशन बांटने के लिए आते हैं, लेकिन वे लोग हमें नहीं देते हैं। उनको कहना है कि तुमलोग मकान में रहते हो। तुम्हें क्या जरूरत होगी! बार-बार समझाने पर भी वे हमें राशन नहीं देते हैं। वे कहते हैं कि यह सब झुग्गी–झोपड़ी में रहने वालों के लिए है।

इस परेशानी को देखते हुए शिवानी की मां को पता चला कि कुछ ही दूरी पर एक मुखिया मार्केट है। वहां पर कुछ भोजन के वाहन आते हैं। उसके द्वारा रोटी, सब्जी, खिचड़ी, दाल–चावल झुग्गी में रहने वाले जरूरतमंद लोगों को दिया जाता है। शिवानी की मां भी वहां जाने लगी, लेकिन लोगों की संख्या अधिक होने के कारण लाईन काफी लंबी लग जाती थी। कभी खाना मिलता, कभी नहीं। शिवानी की मां को कई बार खाली हाथ वापस आना पड़ा है।

इस परेशानी से छुटकारा पाने के लिए शिवानी के मां ने आस-पास में रह रहे हैं लोगों से कुछ पैसे उधार लिए। कुछ राशन लाई, लेकिन वह राशन भी खत्म होने वाला है। इन परिस्थितियों से गुजरते हुए शिवानी के माता-पिता काफी परेशान और चिंतित रहने लगे हैं। उन्हें उम्मीद है कि जल्दी ही ये सब परेशानी खत्म होने वाली है। सबकुछ पहले जैसा हो जाएगा।

हालातों ने किया मजबूर, कर्ज तले दब रहा परिवार

बातूनी रिपोर्टर गोलेनूर

परिवारिक जानकारी: बच्ची का नाम गोलेनूर है। उसके परिवार में कुल 5 सदस्य हैं। माता–पिता के अलावा उसका एक छोटा भाई और एक छोटी बहन हैं। परिवार पहले गांव हसुआ, जिला उत्तर दिनाजपुर, पश्चिम बंगाल में रहता था। वहां परिवार बेरोजगार होने के कारण गुरुग्राम में आ गया। अब इन्हें यहां लगभग तीन साल हो गए हैं। यहाँ उसकी मम्मी-पापा कोठियों में हाउसकीपिंग का काम करते हैं। गोलेनूर घर के काम में हाथ बंटाती है।

लॉकडाउन की वर्तमान परिस्थिति:- लॉकडाउन में घर की आर्थिक स्थिति को संभालने के लिए गोलेनूर के पिताजी ने कुछ लोगों से उधार मांगा था, लेकिन हर किसी ने उधार देने से मना कर दिया। फिर उन्होंने अपने ठेकेदार से 8000 रुपये उधार लिए हैं, ताकि वह अपने घर का पालन–पोषण कर जीवन–यापन चला सके।

घर में राशन भी खत्म हो चुका है। कुछ बचे हुए पैसों से पूरा परिवार किसी तरह से अपना गुजारा कर रहा है। दूसरी तरफ ठेकेदार को भी पैसों की जरूरत है और वह उनसे पैसे मांग रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से गोलेनूर के मम्मी–पापा पैसे लौटाने से असमर्थ हैं। उन्होंने चेतना से मदद का आग्रह किया है, ताकि वे कठिनाइयों की इस घड़ी में किसी तरह से अपना जीवनयापन कर पाएं। गोलेनूर को पढ़ाई करना बहुत अच्छा लगता है। वह चाहती थी कि इसका इस बार स्कूल में दाखिला हो जाए। लॉकडाउन की वजह से स्कूल में दाखिला नहीं हो पाया। वह इस गंभीर परिस्थिति को खत्म होने का इंतजार कर रही है, ताकि इसका जल्दी से जल्दी स्कूल में एडमिशन हो सके। वह चेतना की सभी गतिविधियों में भाग लेती है और अपनी रुचि भी प्रकट करती है। कोरोना वायरस जैसी भयानक महामारी की समस्या से बचने के लिए घरों में रहती है। इस दयनीय स्थिति में अपना धैर्य बनाए हुए है। लॉकडाउन के खुलने का इंतजार कर रही है। गोलेनूर और इसका परिवार इस बात से चिंतित हैं कि आगे का गुजारा किस तरह करेंगे।

कच्चा–पक्का खाना खाने को मजबूर बच्चे

बातूनी रिपोर्टर संगीता

यह खबर आगरा शहर के मारवाड़ी इंद्रा नगर में रहने वाले बच्चों की है। एक पत्रकार ने बच्चों से फोन के माध्यम से बात की। बच्चों ने बताया– हम बच्चे लॉकडाउन की वजह से बहुत परेशान हैं। खाने को मोहताज हैं। यहां कोई सुविधा नहीं है। काई इंतजाम नहीं है। कभी–कभी कोई खाना देने आते हैं, उनका खाना सही से पका नहीं होता है । वैसा खाना खाने से बच्चों के पेट में दर्द होने लगता है। मजबूर में भूखे बच्चे वैसा खाना खा लेते हैं।

उन्होंने बताया– हमें डर है कि अगर यह खाना भी नहीं खाएंगे तो भूखे रह जाएंगे। बच्चों के माता–पिता की शिकायत है कि लॉकडाउन में कोई हमारी नहीं सुनता है। ऊपर से बीच–बीच में मौसम खराब हो जाता है। बरसात भी होने लगती है। झुग्गियों में बरसात का पानी चला जाता है। ठंडी हवाओं के चलने से से बच्चों कि तबीयत भी बिगड़ रही है।

एक लड़की ने शिकायत के साथ अपनी समस्या बताई। उसने कहा– इस लॉकडाउन के समय हमारे माता–पिता के पास एक पैसा भी नहीं है, जो बच्चो की दवाई का बन्दोबस्त कर सके। हम बच्चों को बहुत कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। बच्चे दुआ कर रहे हैं कि जल्द लॉकडाउन खुल जाए।

लोगों ने उधार देना किया बंद

बातूनी रिपोर्टर सानू

नगला पत्थर घोड़ा में रहने वाली तेरह वर्षीय सानू भी लॉकडाउन के कारण मुसीबतों का शिकार हो गई है। सानू ने अपने बारे में बताया– कोरोना के कारण लॉकडाउन होने से पहले मैं कोठी पर झाड़ू, बरतन, पोछा का काम करने जाती थी। मेरी मम्मी बाहर घरों में काम करने के लिए जाती थी। मेरे पापा रिक्शा चलते हैं। उनकी एक बुरी आदत है। वे शराब में सारे पैसे उड़ा देते हैं। एक भी पैसा घर में नहीं देते हैं इस कारण मुझे और मेरी माँ को ही घर का खर्च चलाना पड़ता है।

वह आगे बताती है– मेरी माँ के पैसो से मकान का किराया निकल जाता है और मेरे पैसों से घर का खर्च चल जाता है। पर जब से लॉकडाउन लगा है हमें बहुत समस्या हो रही है घर का राशन खत्म हो गया है मेरे छोटे छोटे भाई बहन है, जो खाने के लिए रोते हैं। लॉकडाउन के चलते मैं और मेरी मां काम काम पर नहीं जा पा रहे हैं।

घर में खाने–पीने जैसे खाद्य सामग्री की कमी की समस्याएं बढ़ती ही जा रही है। जबसे हमें इनका सामना करना पड़ा है तब से ही हम किसी से कुछ पैसे उधार मांग कर अपना गुजारा कर लेते थे। किंतु अब तो कोई उधार भी नहीं दे रहा है। किराने का दुकानदार उधार नहीं देता है। जबकि पहले वह देता था।

पिता की मृत्यु का गम,लॉकडाउन की मार से त्रस्त

बातूनी रिपोर्टर किरण

यह केस स्टडी राजनगर में रहने वाली 11 वर्षीय लड़की किरण की है। उसके परिवार में छह लोग हैं। माता–पिता, खुद किरण, उसका एक भाई और तीन बहनें है। उसने अपने बारे में बताया– मेरे पिताजी की हमेशा तबीयत खराब रहती थी। वह चारपाई पर लेटे ही रहते थे।

उनके शरीर के अंदर के सभी अंग खराब हो चुके थे। उनमें चलने–फिरने की क्षमता बिल्कुल भी नहीं थी। इसलिए मेरे पिताजी ने दो-तीन महीने अपना जीवन घर में चारपाई पर ही व्यतीत किया। कुछ दिनों के बाद उनकी मृत्यु गई। पापा ने हमारा साथ छोड़ दिया और हम दिन–प्रति–दिन कर्ज में डूबते चले गए।

किरण ने आपनी तकलीफों के बारे में बताया– अब इस लॉकडाउन की समस्या ने हम बच्चों को मार रखा है। हमारा परिवार तो पहले से ही कर्ज में डूबा हुआ था। लॉकडाउन के चलते हमारे ऊपर और भी ज्यादा कर्ज हो गया है। हमें सही से रोटी भी नसीब नहीं हो रही है। पापा के गम ने पहले ही हमें तोड़ दिया था।

किरण अपनी मां और दूसरे भाई–बहनों का दर्द दुखी मन से बयान करती है। कहती है– इस कोरोना बीमारी की वजह से आई लॉकडाउन नई समस्या पैदा हो गई है। उससे हम सभी भाई–बहन और मां हताश हो गए हैं। मेरी मां की भी तबीयत खराब रहती है। मेरी मां और हम तीनो बहनें जूते पर बुनाई करने का काम करते हैं। मां की तबीयत खराब होने के कारण वह काम नही कर पाती है।

किरन ने आगे बताया कि उसकी एक बहन की भी तबीयत खराब रहती है। डॉक्टर ने उसके पेट में पथरी बताई है। पैसे नहीं होने के कारण उसका इलाज भी नहीं हो पा रहा है। डाक्टर ने आपरेशन करवाने की बात कही है। उसके पेट में कभी भी अचानक से तेज दर्द उठ जाता है। हमें इन सभी समस्याओं से गुजरना पड़ रहा है।

उसने बताया कि लॉकडाउन में चाइल्ड लाईन की दीदी ने हमें कुछ दिन का खाने का कच्चा सामान दिया था। उसी से उनका गुजारा चल रहा है। अब चिंता सता रही है कि अगर लॉकडाउन नहीं खुला तो उनका आगे का गुजारा कैसे हो पाएगा?

किरण कहती है– ऐसे तो हम एक न एक दिन भूखे पेट मर जाएंगे।

लॉकडाउन में ब्याज पर कर्ज से जीवनयापन

बातूनी रिपोर्टर राम

परिचय एवं पारिवारिक स्थितिः 16 वर्षीय राम वाल्मीकि कैम्प, लॉरेंस रोड वेस्ट दिल्ली के रहने वाले एक छह सदस्यीय परिवार का सदस्य है। परिवार में उसकी माता, वह खुद और 4 भाई हैं। कुछ साल पहले राम के पिता का देहांत हो चुका है। उसकी दो बहनें भी हैं, जिनकी शादी हो चुकी है। पिता के देहांत हो जाने के कारण राम की मां कोठी में काम करने जाती है। राम कूरियर बॉय का काम करता हैं। उसके दो भाई राज मिस्त्री का काम करते हैं, जबकि एक भाई खाली है। पूरे परिवार का जीवनयापन बड़ी कठिनाई से होता है।

लॉकडाउन के बाद की स्थितिः लॉकडाउन की वजह से राम की माताजी, राम तथा उसके दोनों भाई काम पर नहीं जा पा रहे हैं। जिससे घर पर पैसों की तंगी आ गई है। राम के अनुसार राशन कार्ड में सिर्फ उसकी माताजी का ही नाम हैं, जिससे केवल एक ही व्यक्ति का राशन मिला है। वह भी 7.5 किलो ग्राम। राम ने बताया कि उनकी माताजी का जीरो बैलेंस अकाउंट हैं, लेकिन उसमें अभी तक पैसे नहीं आये हैं। सरकार की किसी भी योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है।

राम ने बताया कि जब उसकी स्थिति घर में राशन नहीं होने के कारण खराब हो गयी थी, तब उसने 7 हजार रुपये पांच परसेंट ब्याज पर कर्जे लिये। परिवार का उसी पैसे से गुजरा चल रहा है। खाली समय में राम टीवी देखकर, गाने सुनकर या मोबाइल चलाकर अपना समय व्यतीत कर रहा है। उन्हें लॉकडाउन खत्म होने का इंतजार है, ताकि वे अपने–अपने काम पर जा सकें।

बड़े परिवार में कबाड़ बीनने वाले बच्चों के खाली पेट

बातूनी रिपोर्टर मसीरा

परिचय एवं पारिवारिक स्थितिः 10 वर्षीय मसीरा पुरनिया कॉन्टेक्ट पर अपने चार–भाई बहनों के साथ पढ़ने आती है। मसीरा पढ़ाई के साथ–साथ कोठियों में साफ–सफाई और बर्तन धोने का भी काम करती है। मसीरा के कुल ग्यारह भाई–बहन हैं, जिनमें एक बहन और दो भाइयों की शादी हो चुकी है। दोनों भाई अपने परिवार के साथ गांव में रहते हैं और बहन अपने ससुराल में रहती है। बाकी के आठ भाई–बहन और उसकी मां मिलाकर कुल नौ सदस्य इकट्ठे रहते हैं।

लॉकडाउन में मसीरा के घर की स्थिति बहुत ज्यादा खराब हो गई है। उसकी मां एक होस्टल में झाड़ू–पोंछा और खाना बनाने का काम करती थी। वहीं से बचा हुआ खाना घर भी ले आती थी। लॉकडाउन होने से होस्टल के बच्चे घर चले गए हैं। इसलिए उसकी मां को भी घर में ही रहना पड़ता है। मसीरा कि एक छोटी बहन है, जिसके हाथ की उंगलियां नहीं हैं वह कोई काम नहीं कर सकती है। उसके दो बड़े भाई मोटर साईकिल मैकेनिक के पास काम करते थे। उसके पापा की मृत्यु हो चुकी है।

लॉकडाउन के बाद की स्थितिः मसीरा बहुत बड़े परिवार का एक सदस्य है। लॉकडाउन से पहले दो भाई और बहन को छोड़कर सभी लोग काम करते थे तब जाकर घर का खर्चा चलता था। कोरोना से बचाव को लेकर किए गए उपाय लॉकडाउन में सभी घर पर ही रहते हैं। मसीरा के सभी भाई–बहन और मां अपने–अपने मालिकों से उधार पैसे ले चुके हैं।

इस मुश्किल भरे दौर में उन्हें कहीं से खाना मिल जाता है, तो वे आधा–आधा पेट खा लेते है। कभी जब राशन मिलता है तो उससे ज्यादा से ज्याद दो–तीन बार का ही खाना बन पाता है। कारण राशन बहुत कम मिलता है।

बच्चे खाली समय में कूड़े से कबाड़ बीनते हैं। अगर कुछ कबाड़ मिल गया, तो उसे बेचकर बन या ब्रेड लेकर खा लिया करते थे। लॉकडाउन होने से यह काम भी बंद हो चुका है। मसीरा का मन पढ़ाई में बहुत कम लगता है, परंतु खाने की और अपने परिवार की उसको ज्यादा चिंता रहती है। मसीरा तो छोटी बच्ची है, परन्तु वह घर के सभी काम कर लेती है।

बच्चों की दयनीय स्थिति और राशन का अभाव

बातूनी रिपोर्टर गुलजार

परिचय एवं पारिवारिक स्थितिः11 वर्षीय गुलजार अपने परिवार के साथ बादशाहपुर,सेक्टर 66, गुरुग्राम में रहता है। उसके परिवार में कुल चार सदस्य हैं। माता-पिता और उसके अलावा एक छोटा भाई है। गुलजार के माता-पिता कोठियों में हाउसकीपिंग का काम करते हैं। उसी से अपना जीवन–यापन करते हैं। बड़ी ही कठिनाई से उनलोगों का भरण पोषण हो पाता है। गुलजार को चेतना संस्था से जुड़े अभी 7 महीने हुए हैं।

लॉकडाउन के बाद की स्थितिः लॉकडाउन की वजह से गुलजार के पिताजी और माताजी काम पर नही जा पा रहे हैं, जिस कारण घर पर पैसों का अभाव हो गया है। गुलजार की माताजी ने बताया कि बच्चे घर में बोर हो रहे हैं। वह लूडो खेल कर या कोई दूसरा गेम खेलकर, या फिर टी.वी. देखकर अपना समय व्यतीत कर रहे हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि पिछले दिनों तेज बारिश होने की वजह से उनके आसपास के क्षेत्रों में पानी और कीचड़ जमा हो गया है। इस कारण बच्चे अब घर के बाहर भी नहीं खेल पा रहे हैं। वहां के लोगों से बात कर मालुम हुआ कि बारिश से एक दिन पहले ही इनके क्षेत्र में राशन बांटा गया था। उन्हें राशन नहीं मिल पाया।

चेतना कार्यकर्ता द्वारा कर्ज लिए जाने के बारे में पूछने पर उन्होंने किसी भी तरह का कर्ज लिए जाने से इनकार कर दिया। गुलजार और इसका परिवार इस लॉकडाउन की परिस्थिति में बहुत ही दयनीय स्थिति में अपना जीवन–यापन कर पा रहे हैं।

कविता

कोरोना वायरस पर आधारित कविता

यह जंग भी जीत जायेंगे!
बच्चों लगालो मास्क,
बीस सेकंड धोएं अपने हाथ!
तभी तो कोरोना वायरस को दे सकेंगे मात!
अब इसको मिलकर भगाएंगे हम सारे!
चिंता की कोई बात नहीं,
हम जैसा किसका साथ नहीं!
घर बैठे ही रचना कर सफल हो जायेंगे!
जो ठाना है वो कर दिखायेंगे!
कोरोना वायरस को अपने देश से भगाएंगे!
कर लिया इसने जो था करना,
अब हम घर बैठकर ही इसे मजा चखायेंगे!
यही तो है रणनीति देश की हमारी,
कोरोना वायरस के अब पसीने छूट जायेंगे!
आएगा यह मंजर भी कि देश के नागरिक
यह जंग भी जीत जायेंगे!

– सलाहकार शन्नों

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार के प्रकाशन में सहयोग के लिए डायमंड स्पांसर सरदार नगीना सिंह का आभार व्यक्त करता है। आप भी बालकनामा के प्रकाशन में सहयोग दे सकते हैं।

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -balaknamaeditor@gmail.com फोन - 41644471